Nagari Pracharini Granthmala Series No. 6.

महाकवि श्रीनन्ददास जी कृत

रास-पञ्चाध्यायी

काशीनिवासी

श्रीराधाकृष्णदास द्वारा सम्पादित

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित।

———:o:———

1903
T. P. Works, Benares.

उपक्रम

बहुत से यूरोपीय और एतद्देशीय सज्जन प्रायः "नागरीप्रचारिणी सभा" से पूछा करते थे कि भाषा में सर्वोत्तम ग्रन्थ कौन हैं जिनके पढ़ने से हिन्दी का पूरा ज्ञान हो जाय। इस पर सभा ने हिन्दी के ज्ञाताओं की एक सब कमिटी बना दी जिसने गद्य पद्य के बहुतेरे ग्रंथों की सूची बना दी, जो कि नवें वर्ष की रिपोर्ट में छप गई है। इसको देखकर बहुतेरे सज्जन सब ग्रंथों की खोज करने लगे पर बहुत से ग्रंथ छपे ही नहीं हैं, बहुतेरे अब मिलते नहीं और बहुतेरे बहुत ही रद्दी छपे हैं। लोगों के आग्रह पर सभा ने उन में से कुछ ग्रंथों को "ग्रन्थमाला" द्वारा प्रकाशित करने का निश्चय किया। यह "रास पञ्चाध्याई" नन्ददास जी कृत भी उन्हीं में से एक है। जैसा सरस भावपूर्ण यह ग्रन्थ बना है वैसे ग्रन्थ भाषा में विरले ही हैं, इस लिये यही पहिले प्रकाशित किया जाता है।

इस के प्रकाश करने में बहुत कठिनाइयाँ पड़ीं। इसे एक बेर पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने "हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" में छापा था, और मुझे एक प्रति मथुरा की लीथो में छपी मिली थी, उन दोनों को मिलाने से पाठ-भेद बहुत निकला तथा कुछ पद ऐसे मिले जो चन्द्रिका में न थे और कुछ ऐसे जो मथुरा वाली में नहीं। मैंने चन्द्रिका के हाशिये पर मथुरावाली पुस्तक के उन पदों को जो उस में न थे लिख लिया था। अब जब इसे प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई तो दोनों को मिलाना चाहा परन्तु दुर्भाग्यवश आरम्भ के १० पन्ने मथुरावाली पुस्तक के खो गए जो बहुत ढूँढ़ने पर भी न मिले। पुस्तक को बाज़ार में भी ढूँढ़ डाला पर कहीं न मिली। सौभाग्यवश उस में के अधिक पद चन्द्रिका के हाशिये पर मैं लिख चुका था, इस लिये ११ वें पृष्ठ से पाठान्तर ठीक किया गया आदि का वैसा ही रहा। इस

के पीछे एक प्रति बाबू कार्तिकप्रसादजी के यहाँ मिली परन्तु वह अत्यन्तही अशुद्ध है, दूसरी एक प्रति केवल प्रथम अध्याय की पण्डित किशोरी लाल जी गोस्वामी की लिखी मिली इसने आदि के भाग के शोधने में सहायता दी। इन ग्रन्थों से शुद्ध करके यह ग्रन्थ छापा जाता है।

चन्द्रिका की प्रति के अतिरिक्त सब प्रतियों में स्थान स्थान पर कुछ दोहे भी दिए हैं और पाँचो अध्याय भी लगाया है। अध्याय मैं ने भी लगा दिया है और मूल श्री मद्भागवत में जो नाम उन अध्यायों का लिखा है वह भी फुट नोट में लिख दिया है, परन्तु दोहों को मूल में न रख कर नोट में दिया है क्योंकि यह स्पष्ट जान पड़ता है कि ये दोहे कदापि नन्ददास जी के नहीं हैं क्योंकि कहाँ तो वह कविता और कहाँ ये भद्दे दोहे। दूसरे श्री मद्भागवत में कहीं श्री मती राधिका जी का नाम नहीं आया है और ऐसे ही नन्ददास जी ने भी इस को बचाया है, परन्तु दोहे वाले ने इस बारीकी को न समझकर एक दोहे में भद्दी तरह पर नाम दे दिया है जिसे पाठकगण स्वयं जाँच सकते हैं। पदों के क्रम का भी बहुत कुछ उलट पलट है, मैं ने प्रायः चन्द्रिका का क्रम और पाठ ही प्रधान रक्खा है। हाँ कोई कोई पाठान्तर मुझे दूसरी प्रतियों का विशेष अच्छा जान पड़ा है तो उन को प्रधान कर दिया है।

इस ग्रन्थ के शोधने में मुझको बाबू जगन्नाथ दास (रत्नाकर) जी से सहायता मिली है इस लिये उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

आशा है कि इस ग्रन्थ के अवलोकन से भाषा रसिक मात्र को बड़ा आनन्द होगा।

श्री राधाकृष्णदास

——:*:——

श्रीहरिः

श्रीनन्ददास जी

———:0:———

नन्ददास जी भाषा के महान् कवियों में हुए हैं। इनके विषय में यह कहावत प्रसिद्ध है कि "और सब गढ़िया, नन्ददास जड़िया" इनकी कविता में माधुर्य और पाण्डित्य भरा है। इनके बनाए ग्रन्थ १. नाममाला, २ अनेकार्थ ३ रास-पञ्चाध्याई ४ रुक्मिणीमङ्गल ५ श्री मद्भागवत दशम स्कन्ध ६ दानलीला ७ मानलीला, प्रसिद्ध हैं, और सहस्रावधि पद इनके बनाए गाए जाते हैं। इन सभों में रास-पञ्चाध्याई का माधुर्य बहुत ही बढ़कर है। नाम को तो यह श्री मद्भागवत का अनुवाद है परन्तु वास्तविक यह एक स्वतन्त्र कविता है। इसकी तुलना भाषा में श्री जयदेव जी के "गीत-गोविन्द" से हो सकती है। इनका चरित्र हम लोगों को मुख्य करके दो स्थानों में उपलब्ध होता है, एक तो नाभा जी कृत भक्तमाल और दूसरे "दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता" इन्हों दोनों ग्रन्थों से ही और स्थानों में लिया गया है।

"भक्तमाल" में दो नन्ददास का वर्णन है। एक के विषय में लिखा है कि "नाभा ज्यों नन्ददास मुई इक बच्छ जिवाई" और दूसरे के विषय में लिखा है:—

श्री नन्ददास आनन्द निधि रसिक सु प्रभु हित रँगमगे।
लीला पद रसरीति ग्रन्थ रचना में नागर॥ आ
सरस उक्ति युत युक्ति भक्ति रस गान उजागर। रस

पयान्
प्रचुरय पथ लौं सुजस रामपुर ग्राम निवासी ।।
सकल सुकल संबलित भक्त पद रेनु उपासी ।
श्री चन्द्रहास अग्रज सुहृद परम प्रेम पद में पगे ।। ११० ।।

श्री नन्ददास आनन्द निधिः—

"भक्तमाल" के टीकाकार प्रियादास जी ने पहिले नन्ददास जी के विषय मे लिखा है कि "बरैली में नन्ददास जी एक ब्राह्मण रहते थे जो कि भक्त साधुओं की सेवा में रत थे, उनसे ब्राह्मण लोग बुरा मानते थे, इसलिये उनके खेत में एक दिन ब्राह्मणों ने एक मरी बछिया डाल दी और प्रसिद्ध किया कि यह हत्यारा है इसे गोहत्या लगी, नन्ददास जी ने जाकर मरी बछिया को देखा और जो चुमकारा वह खड़ी हो गई सभों का मुँह फीका पड़ गया।" दूसरे नन्ददास जी के विषय में टीकाकार ने कुछ नहीं लिखा है। मूल और टीका के आधार पर राजा प्रताप सिंह ने "भक्त कल्पद्रुम" नामक भक्तमाल गद्य में बनाया है उसमें लिखा है कि "नन्ददास जी पुत्र चन्द्रहाँस जाति ब्राह्मण रहने वाले रामपुर के भगवत् भक्त प्रेमी व नामी विख्यात हैं कि अनुक्षण सिवाय भगवत् व कीर्तन के दूसरा काम नहीं था। रचना उनकी जैसे पञ्चाध्याई, व रुक्मिणी मङ्गल व दशमस्कन्ध व नाममाला व अनेकार्थ व दानलीला व मानलीला आदि हजारों विष्णुपद उनकी भक्ति के सदृश सारे संसार में विख्यात हैं, उनके काव्य की श्लाघा में कवि लोगों ने यह कहा है कि, "और सब गढ़िया नन्ददास जड़िया" अष्टछाप के भक्तों में इनकी भी गिनती है। जान रक्खो आठ भक्त जिन्हों ने श्रीकृष्ण स्वामी

के चरित्र कीर्तन किए और उनके विष्णुपद ब्रज में भगवत् के सम्मुख कीर्तन किए जाते हैं उनकी गिनती अष्टछाप में है और नाम मङ्गल रूप उनके यह हैं १ सूरदास २ कृष्ण-दास ३ छीत स्वामी ४ नन्ददास ५ परमानन्ददास ६ चतुर्भुज ७ व्यास जी ८ हरिदास " राजा साहब ने इस लेख में दो भूल की हैं, एक तो यह कि भक्तमाल में नन्ददास जी को चन्द्रहाँस का अग्रज अर्थात् बड़ा भाई लिखा है पुत्र नहीं दूसरे यह कि अष्टछाप में व्यास जी और हरिदास जी नहीं हैं। अष्टछाप में चार शिष्य श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के हैं और चार उनके पुत्र श्री गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के। पहिले चार १ सूरदास २ परमानन्ददास ३ कृष्णदास ४ कुम्भनदास और दूसरे चार १ नन्ददास २ चतुर्भुजदास ३ छीतस्वामी ४ गोविन्दस्वामी थे। " शिवसिंह सरोज " में भी यही बातें लिखी हैं उन्हों ने इनका समय सम्वत १५८५ लिखा है जो कि गोस्वामी श्री विट्ठलनाथ जी के जन्म सम्वत १५७२ से मिलाने मे कुछ और आगे आना चाहिए।

" दोसौ बावन वैष्णव की वार्ता" में इनका चरित्र विस्तार से लिखा है। उसका आशय यह है कि "नन्ददास जी सनोड़िया ब्राह्मण तुलसीदास के छोटे भाई पूर्वदेश के रहने वाले थे। ये दोनो भाई रामानन्द जी के शिष्य थे। नन्ददास जी पण्डित बड़े थे परन्तु विषयासक्त भी बहुत थे। नाच तमाशे में अवश्य पहुँचते थे। एक समय कुछ लोग श्री रणछोड़ जी (द्वारिका) के दर्शन को जाते थे उन के साथ ये भी तुलसीदास से आग्रह करके दर्शन के लिये चले। मथुरा जी पहुँच कर वहां की शोभा देख मन लुभा गया

और यह निश्चय कर कि झट पट द्वारिका जी का दर्शन कर यहाँ लौट आवैं और कुछ दिन यहीं आनन्द में वितावैं, साथ वालों का साथ छोड़ अकेले आगे बढ़े, परन्तु रास्ता भूलकर सिंहनद में जा पहुँचे। वहाँ एक क्षत्री की बहू अपने घर के बारजा में खड़ी बाल सुखा रही थी, उसका रूप देख ये मोहित हो गए। एक स्थान पर डेरा करके किसी प्रकार रात काटी, सबेरे फिर वहीं पहुँचे पर उसको न देखा, दिन भर वहीं अड़े खड़े रहे, संध्या को उस घर की एक लौंडी ने इन्हें देखकर बिना अन्नजल खड़े रहने का कारण पूछा, नन्ददास ने कहा कि तुम्हारी बहू के दर्शन के लिये मेरी यह दशा है, लौंडी ने जाकर उस से कहा और बहुत समझाया तब वह बारजे में आई और नन्ददास जी देखकर चले गए। यों ही नित्य जाते और उसे देखकर लौट आते। होते होते यह बात सारे नगर में प्रसिद्ध हो गई, उस स्त्री के घर वालों ने बहुत कुछ रोका टोका पर नन्ददास जी ने एक न माना और कहा कि बहुत दुख दोगे तो मैं प्राण दे दूँगा तुम्हें ब्रम्हहत्या लगेगी। हार कर उन लोगों ने निश्चय किया कि अब इस स्थान को छोड़ श्री गोकुल में चल रहना ही ठीक है सो गाड़ी कर बेटा बहू और लौंड़ी तथा दो नौकर ले रातो रात वह चुप चाप नगर छोड़कर चल दिया। सबेरे नन्ददास जी ने आकर घर में ताला बन्द देखा। तब पता लगा ये भी गोकुल की ओर चल पड़े और रास्ते ही में उन लोगों से जा मिले और उन लोगों के लड़ने भिड़ने पर भी दूर दूर पीछे लगे चले श्री गोकुल के इस पार पहुँच वह लोग तो नाव पर पार उतर श्री गोकुल में गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथ जी के पास चले गए और नन्ददास जी इसी पार बैठे रहे, और श्री

यमुना जी की स्तुति करते रहे (नेह कारन जमुने प्रथम आई आदि)। श्री गुसाँई जी ने राजभोग पीछे इन लोगों के प्रसाद लेने के लिये चार पत्तल धरवाई तब इन्हों ने विनती किया कि हम लोग तो तीन ही जन हैं चार पत्तल किसकी है, श्री गुसाँई जी ने कहा कि जिस एक वैष्णव को तुम लोग उस पार छोड़ आए हो यह उसकी पत्तल है यह सुन वह लोग बड़े लज्जित हुए तब श्री गुसाँई जी ने कहा कि तुम लोग घबड़ाओ मत अब वह तुम्हें न सतावैगा और अपने एक सेवक को भेजकर नन्ददास जी को बुलवाया। नन्ददास जी की आँखें श्री गुसाँई जी के दर्शन करते ही खुल गईं और चरणों पर गिर विनती किया कि महाराज, मैं बड़ा अधम हूँ सारा जन्म विषय वासना में बिताया, अब आप शरण में रख मेरा उद्धार कीजिए। श्री गुसाँई जी ने श्री यमुना स्नान कराके इन्हें इष्ट मन्त्र दिया तब इनकी दिव्य चक्षु खुल गई और श्री गुसाँई जी की बन्दना में पद बनाया (जयति रुक्मिनिनाथ पद्मावति प्रानपति विप्रकुल छिप्र आनन्दकारी आदि) फिर महाप्रसाद लेने जो बैठे तो लीला का जो अनुभव हुआ तो सारी रात बैठे ही रह गए, पत्तल से न उठे। सवेरे श्री गुसाँई जी ने आकर कहा नन्ददास उठो दर्शन का समय हुआ तब उठे और श्री गुसाँई जी को बन्दना की (प्रात समय श्री वल्लभ सुत को उठतहि रसना लीजिए नाम आदि) तब से दर्शन का आनन्द लेते और भगवद्गुणानुवाद में लगे रहते। तुलसीदास जी ने यह समाचार सुन नन्ददास जी को पत्र लिखा तब इन्हों ने उत्तर दिया कि मैं क्या करूँ आपने तो मेरा विवाह श्री रामचन्द्र जी से कर

दिया था पर बीच में ज़बर्दस्ती श्री कृष्ण ने आकर लूट लिया अब तो सर्वस्व उनके अर्पण कर चुका। नन्ददास जी ने समग्र दशम भागवत की लीला छन्दोबद्ध भाषा में किया था, उसे देख मथुरा के कथा कहने वाले ब्राह्मणों ने आकर श्री गुसाँई जी से विनती की कि इस ग्रन्थ से हम लोगों की जीविका मारी जायगी तब श्री गुसाँई जी की आज्ञा से रास-पञ्चाध्याई मात्र रखकर और सब ग्रन्थ को श्री यमुना जी में पधरा दिया एक दिन तानसेन ने नन्ददास जी का बनाया रास लीला का पद (देखो देखो री नागर नट निर्तत कालिन्दी तट, आदि) अकबर के सामने गाया अकबर ने नन्ददास जी को बुलाया और पूछा कि आपने इस पद में गाया है कि 'नन्ददास गावै तहां निपट निकट' सो आप कैसे निपट निकट पहुंचे? नन्ददास जी ने कहा कि इसका भेद अपनी अमुकी लौंडी से पूछो" बादशाह ने महल में जाकर उस लौंडी से पूछा। वह लौंडी परम वैष्णवी थी और उसे श्रीनाथ जी के दर्शन होते थे तथा उससे नन्ददास जी से बड़ा स्नेह था, बादशाह की बात सुनते ही वह मूर्छित होकर गिरी और शरीर छोड़ दिया, इधर नन्ददास जी ने भी शरीर छोड़ दिया। बादशाह यह चरित्र देख सन्न हो गया। श्री गुसांई जी ने जब यह समाचार सुना तब बड़ी सराहना की"

खड्गविलास प्रेस की छपी रामायण में वैद्यनाथदास प्रणीत एक गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवनचरित्र छपा है उसमें उन्हों ने लिखा है कि "नन्ददास जी कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के रहने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी के

गुरुभाई थे, इनसे ब्राह्मण लोग ईर्षा करते थे, इसलिये एक मरी गाय इनके द्वार पर डाल दी तब इन्हों ने उसको जिला दिया यह देख सब लज्जित हो गए। जब तुलसीदास जी श्री वृन्दाबन गए थे तब ये भी आकर मिले। तुलसीदास जी ने हँसकर कहा कि रामचन्द्र जी का छोड़ कर श्री कृष्ण का गुण गान करने लग गए! नन्ददास जी ने कहा कि मा बाप जिसको सौंप देते हैं उसी का हो रहना पड़ता है "प्रथमहि तुमही धर्‍यो मम नन्ददास अस नाम। दशरथदास न क्यों कहो रटते नित गुन ग्राम॥' यह सुन तुलसीदास जी बड़े प्रसन्न हुए।" इन्होंने ने भ्रम से दोनों नन्ददास को एक कर दिया है।

पूज्य भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने अपने उत्तरार्ध भक्तमाल में इन्हें तुलसीदास जी का छोटा भाई लिखा है।

निदान इन सब लेखों पर विचार करके यह निश्चय होता है कि ये पहिले पूर्वदेश (कदाचित रियासत रामपुर) के रहने वाले सनाढ्य या कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, पीछे ब्रज में जाकर श्री गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के शिष्य हुए। ये संस्कृत के पूर्ण पण्डित थे। इनका पाण्डित्य "अनेकार्थ" और "नाममाला" से स्पष्ट प्रगट होता है। अब जो श्री मद्भागवत भाषा इनके नाम से प्रसिद्ध है इसमें मुझे इनकी बनाई होने में बड़ा सन्देह है-क्योंकि उसकी कविता शैली में नन्ददास जी की कविता की झलक नहीं आती उदाहरण के लिये आदि से कुछ अंश उद्धृत करते हैं:—

"नव लक्षिन करि लक्षि जो, दसवें आश्रय रूप।
नन्द बन्दि कै प्रथम तिहि, श्रीकृष्णाक्ष अनूप॥

चौपाई ॥ परम विचित्र मित्र इक रहै ।
कृष्ण चरित्र सुन्यो सो चहै ॥
तिन कही दसमस्कंध जु आहि ।
भाषा करि कछु बरनौ ताहि ॥
....
तासों नन्द कहत है तहाँ ।
अहो मित्र येती मति कहाँ ॥
जामे बड़े बड़े कविजन उरझे ।
ते वे अजहौं नाहिन सुरझे ॥"

रास-पञ्चाध्याई में स्वयं नन्ददास जी ने श्री मद्भागवत की बहुत कुछ प्रशंसा करके लिखा है कि—

ताहू मैं पुनि अति रहस्य यह पञ्चाध्याई ।
तन मैं जैसे पञ्च-प्राण यों शुक मुनि गाई ॥
परम रसिक इक मीत तौन मोहि आज्ञा दीनी ।
ताही तें यह कथा यथा मति भाषा कीनी ॥"

इससे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि पञ्चाध्याई को उन्हों ने स्वतन्त्र रूप से बनाया, कुछ समग्र श्री मद्भागवत में से बचाकर नहीं रक्खा। लोग कहते हैं कि गङ्गाबाई से इन से बड़ा स्नेह था, उन्हीं के कहने से इन्हों ने इसे बनाया। गङ्गाबाई भी श्री गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की शिष्य थीं और बहुत उत्तम कविता करती थीं, कविता में इनका उपनाम "श्री विट्ठल गिरिधरन" होता था।

चन्द्रहाँस कौन थे इसका मुझे पता नहीं लगा। गोस्वामी तुलसीदास के भाई होने की बात 'वार्ता' में है सम्भव है कि ये गोसाँई जी के गुरु भाई रहे हों पीछे से जाकर गोस्वा-

मा विट्ठलनाथ जी के शिष्य हुए हों या दोनों के विद्या गुरु एक ही हों, । तुलसीदास जी के जीवन चरित्र से उन्हें कोई भाई होने का प्रमाण नहीं मिलता ।

अकबर के दर्बार में बुलाए जाने का वर्णन बार्ता में है । यह सत्य होना सम्भव है क्योंकि अकबर ऐसे महानुभावों के दर्शन का प्रेमी था और गान विद्या का रसिक था, ये गवैये भी अच्छे थे । इनके पद बहुत से ऐसे हैं जो बिना अच्छे गवैयों के गाए नहीं जा सकते । परन्तु "आईन अकबरी" आदि ग्रन्थों में इनका नाम कहीं नहीं मिलता ॥

Catalogus Catalogorum में दो नन्ददास के बनाए दो ग्रन्थ (निम्बार्क तत्व निर्णय और तत्वसार टीका प्रकाशिनी) लिखे हैं परन्तु ये इन नन्ददास के नहीं जान पड़ते । यह कोई निम्बार्क सम्प्रदाय के वैष्णव जान पड़ते हैं ।

"बार्ता" और "भक्तमाल" के विषय में "सूरदासजीके जीवनचरित्र" और "भक्तनामावली" में मैं अपना मत लिख चुका हूं इस लिये फिर से लिखना अनावश्यक जान उसे छोड़ दिया है ॥

रास-पञ्चाध्याई

महाकवि नन्ददास जी कृत

बन्दन करौं कृपा निधान श्री शुक सुभकारी ।
    सुद्ध जोतिमय रूप सदा सुन्दर अविकारी ॥ १ ॥
हरि-लीला-रसमत्त मुदित नित विचरत जग मैं ।
    अद्भुत गति कतहुँ न अटक ह्वै निकसत मग मैं ॥ २ ॥
नीलोत्पल-दल स्याम अङ्ग नव-जोवन भ्राजै ।
    कुटिल अलक मुख-कमल मनों अलि-अवलि विराजै ॥ ३ ॥
लंलित बिसाल सुभाल दिपत जनु निकर निसाकर ।
    कृष्ण भगति प्रतिबन्धे[1] तिमिर कहँ कोटि दिवाकर ॥ ४ ॥
कृपा-रङ्ग-रस-एन नैन राजत रतनारे ।
    कृष्ण-रसासव-पान अलस[2] कछु घूम घुमारे ॥ ५ ॥
उन्नत नासा अधर बिम्ब सुक की छवि छीनी ।
    तिन महँ अद्भुत भाँति जु[3] कछुक लसति मसि भीनी ॥६॥
स्त्रवन कृष्ण-रस-भवन गण्ड-मण्डल भल दरसै ।
    प्रेमानन्द मलिन्द मन्द मुसकनि मधु बरसै ॥ ७ ॥
कम्बु कण्ठ की रेख देखि हरि-धरमु प्रकासै ।
    काम क्रोध मद लोभ मोह जिहिं निरखत नासै ॥ ८ ॥
उर-वर पर अति छवि की भीर कछु बरनि न जाई ।
    जिहिं अन्तर जगमगत निरन्तर कुवँर कन्हाई ॥ ९ ॥

पाठान्तर – १ प्रतिबिम्ब । २ करत । ३ लसति कछु इक मास भीनी ।

सुन्दर उदर उदार रोमावलि राजति भारी ।
    हिय-सरवर रस पूरि चली मनु उमगि पनारी ॥ १० ॥
जिहिँ[1] रस की कुण्डिका नाभि अस सोभित गहरी ।
    त्रिवली ता महँ ललित भाँति मनु उपजति लहरी ॥ ११ ॥
[2]अति सुदेस कटि देस सिंह[3] सोभित जंघनि[4] अस ।
    जौवन[5]-मद आकरसत बरसत प्रेम–सुधा-रस ॥ १२ ॥
गूढ़ जानु आजानुबाहु मद-गज-गति लोलैँ ।
    गङ्गादिकनि पवित्र करत अवनी पर डोलैँ ॥ १३ ॥
सुंदर[6]-पद-अरबिन्द मधुर-मकरन्द मुक्त जहँ ।
    मुनिजन मधुकर-निकर सदा सेवत लोभी तहँ ॥ १४ ॥
जब दिनमनि श्रीकृष्ण दृगनि तेँ दूरि भए दुरि ।
    पसरि पर्‌यौ अँधियार सकल संसार घुमड़ि घुरि ॥ १५ ॥
तिमिर-ग्रसित सब-लोक-ओकँ लखि दुखित दयाकर[8] ।
    प्रगट कियो अद्भुत-प्रभाउ भागवत विभाकर ॥ १६ ॥
जे[9] संसार अँधियार अगैर[10] मैँ मगन भए वर ।
    तिन हित अद्भुत दीप प्रगट कीनो जु कृपाकर ॥ १७ ॥
[11]श्री भागवत सुनाम परम-अभिराम परम मति[12] ।
    निगमसार सुकुमार[13] बिना गुरु-कृपा अगम गति[14] ॥ १८ ॥
ताहू मैँ पुनि अति रहस्य यह पञ्चाध्याई ।
    तन महँ जैसेँ पञ्च-प्रान अस सुक मुनि गाई ॥ १९ ॥

पाठान्तर—१ ता, | २ यह पद चन्द्रिका मेँ नहीँ है।
३ सिह सुन्दर सोभित अस । | ४ सघन ।
५ युवतिन मन । | ६ यह पद चन्द्रिका मेँ नहीँ है।
७ विकल जब लखि दयाकर । | ८ दयाकर = दया के आकर ।
९, ११ ये दोनों पद चान्द्रका मे नही है।
१० अजगर । | १२ गति ।
१३ सुखसार, | १४ आति ।

परम-रसिक इक मीत मोहिँ तिहिँ आज्ञा दीन्ही।
तातेँ मैँ यह कथा जथामति भाषा कीन्ही॥ २० ॥
अब सुन्दर श्री वृन्दावन-गुन गाइ सुनाऊँ।
सकल सिद्धि-दायक नायक पैँ सब सिधि पाऊँ ॥ २१ ॥
श्री वृन्दावन चिद्‌घन कछु छवि वरनि न जाई।
कृष्ण-ललित-लीला के काज गहि रह्यौ जड़ताई ॥ २२ ॥
पुनि तहँ खग मृग कुञ्ज लता वीरुध तृन जेते।
नहिँ न काल-गुन-प्रभा सदा सोभित रहैं तेते ॥ २३ ॥
सकल जन्तु अविरुद्ध जहाँ हरि मृग सँग चरहीँ।
काम क्रोध मद लोभ रहित लीला अनुसरहीँ ॥ २४ ॥
सब दिन रहत बसन्त कृष्ण अवलोकनि लोभा।
त्रिभुवन कानन जा विभूति करि सोभित सोभा ॥ २५ ॥
ज्योँ लक्ष्मी निजु रूप अनूपम पद सेवत नित।
भू विलसति जु विभूति जगत जगमग रहीँ जित कित ॥२६॥
श्री अनन्त महिमा अनन्त को बरनि सकै कवि।
सङ्करषन सो कछुक कही श्री मुख जाकी छवि ॥ २७ ॥

पाठान्तर —१ मथुरा वाली पुस्तक में इसके आगे यह दोहा है:—
श्रीशुकमुनि रूप अनूप है बरनि कह्यो कविनन्द।
अब वृन्दावन बरनिहौं जहँ वृन्दावन-चन्द ॥

२ कछु बरनि सुनाऊँ।

३ इस 'के' का ह्रस्व करके पढ़ना चाहिए। नन्ददास जी ने प्रायः ऐसा किया है इसलिये आगे जहाँ कहीँ इस प्रकार मात्रा बढ़ती हो दीर्घ को ह्रस्व पढ़ना चाहिए।

४ जहँ मृग खग नग कुञ्ज। ५ प्रभाव।

६ सब दिन रहत बसन्त लसै तहँ दिन दिन सोभा (दूसरा पाठान्तर) सब रितु सन्त बसन्त लसन्त जहाँ दिन सोभा।

७ आनँद लता विभूति करत सोभित जहँ सोभा। (दूसरा पाठान्तर) सब कानन जाकी विभूति करि सोभित सोभा। ८ औ।

देवनि मैं श्री रमारमन नारायन प्रभु जस।
　　बन मैं वृन्दावन सुदेस सबै दिन सोभित अस ॥ २८ ॥
या बन की वर-बानिक या बन ही बनि आवै।
　　सेस महेस सुरेस गनेस न पारहिँ पावै ॥ २६ ॥
जहँ जेतिक द्रुम जाति कलपतरु सम सब लायक।
　　चिन्तामनि सम सकल भूमि चिन्तित फल दायक ॥ ३० ॥
तिन महँ इकु जु कलपतरु लगि रही जगमग जोती।
　　पात मूल फल फूल सकल हीरा मनि मोती ॥ ३१ ॥
तहँ सुतियन के गन्ध लुब्ध अस गान करत अलि।
　　वर किन्नर गन्धर्व अपछरा तिन पर करि बलि ॥ ३२ ॥
अमृत-फुही सुख गुही अति सुही परति रहति नित।
　　रास-रसिक सुन्दर पिय को स्रम दूर करन हित ॥ ३३ ॥
वा सुरतरु महँ और एक अदभुत छवि छाजै।
　　साखा दल फल फूलनि हरि-प्रतिबिम्ब बिराजै ॥ ३४ ॥
तातरु कोमल कनक भूमि मनिमय मोहत मन।
　　दिखियत सब प्रतिबिम्ब मनों घर महँ दूसर बन ॥ ३५ ॥
तिहिं सौरभ सों मत्त मुदित अलि धाए आवत।
　　सुक सारिका रतनमय श्री गोविंद गुन गावत ॥ ३६ ॥
थँलज जलज झलमलत ललित बहु भवँर उड़ावै।
　　उड़ि उड़ि परत पराग कछु छवि कहति न आवै ॥ ३७ ॥
जमुनाजू अति प्रेम भरी नित बहैं सुगहरी।
　　मनि-मण्डित महि माहिं दौरि जनु परसति लहरी ॥ ३८ ॥

पाठान्तर—१ जैसे।　　२ सोभित हैं ऐसे।　　३ मय।
४ तहँ सुनियन (दूसरा पाठान्तर) तिन मधि तिनके।
५, ६ ये दोनो पद चन्द्रिका में नहीं हैं।
६ मनि मन्दिर दोउ तीर उठत छवि अदभुत लहरी।

तहँ इकु मनिमय अंङ्कचित्र को सङ्क सुभग अति ।
    तापर षोड़स-दल-सरोज अद्भुत चक्राकृति ॥ ३६ ॥
मधि कमनीय करिनिका सब सुख सुन्दर कन्दर ।
    तहँ राजत ब्रजराज कुवँर-वर रसिक-पुरन्दर ॥ ४० ॥
निकर विभाकर-दुति मेटत सुभ मनि कौस्तुभ अस ।
    [2]सुन्दर नन्द-कुवँर उर पर सोइ लागत उड़ जस ॥ ४१ ॥
मोहन अद्भुत रूप कहि न आवति छवि ताकी ।
    अखिल-खण्ड-व्यापी जु ब्रम्ह आभा है जाकी ॥ ४२ ॥
[3]परमातमा परब्रह्म सबन के अन्तरजामी ।
    नारायन भगवान धरम करि सब के स्वामी ॥ ४३ ॥
बाल कुमर पौगण्ड धरम आ[4]क्रान्त ललित तन ।
    धरमी नित्य-किसोर कान्ह मोहत सब को मन ॥ ४४ ॥
कंठ [5]मोतिन की माल ललित बनमाल धरे पिय ।
    मन्द मधुर हरि पीत बसन फरकत करषत हिय ॥ ४५ ॥
अस अद्भुत गोपाल लाल सब काल बसत जहँ ।
    याही तें बैकुण्ठ विभव कुण्ठित लागत तहँ ॥ ४६ ॥
[6]जदपि सहज माधुरी विपिन सब दिन सुखदाई ।
    तदपि रँगीली सरद समय मिलि अति छबि पाई ॥ ४७ ॥
ज्यौं अद्भुत नग जगमगाय सुन्दर जराय सँग ।
    रूपवन्त गुनवन्त [7]भूरि भूषित भूषन अँग ॥ ४८ ॥
रजनी मुख सुख देत ललित [8]मुकलित जु मालती ।
    जस नव-जोबन पाइ लसित गुनवती बाल ती ॥ ४९ ॥

पाठान्तर—१ वितत विसद सत कोस ।
२ हरि उर रुचिर निविड़ विसेस लागत उडुगन अस ।
३ सरब आतमाराम ।   ४ आकार ।
५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।   ६ सहज माधुरी वृन्दाबन ।
७ बहुरि ।   ८ प्रफुलित ।

नव फूलनि सों फूलि फूल अस लगति लुनाई ।
सरद छबीली छपा हँसत छवि सों मनु आई ॥ ५० ॥
ताही छिन उड़राज उदित रस-रास-सहायक ।
कुमकुम-मण्डित बदन प्रिया जनु नागरि नायक ॥ ५१ ॥
कोमल किरन अरुनिमा घन मैं व्यापि रही अस ।
मनसिज खेल्यो फागु घुमड़ि घुरि रह्यौ गुलाल जस ॥ ५२ ॥
फटिक छटा सी किरन कुञ्ज-रन्ध्रनि जब आई ।
मानों बितन-बितान सुदेस तनाउ तनाई ॥ ५३ ॥
मन्द मन्द चलि चारु चन्द्रमा अस छबि पाई ।
उझकत हैं पिय रमा-रमन मनु कौतुक आई ॥ ५४ ॥
तब लीनी कर-कमल जोगमाया सी मुरली ।
अघटित घटना चतुर बहुरि अधरासव जुरली ॥ ५५ ॥
जाकी धुनि तें अगम निगम प्रगटे बड़ नागर ।
नाद-ब्रह्म की जननि मोहिनी सब सुखसागर ॥ ५६ ॥
नागर नवल किसोर कान्ह कल-गान कियो अस ।
बाम बिलोचन बालन के मन हरन होइ जस ॥ ५७ ॥
मोहन मुरलीनाद कियो सुसुन्यो सब किनहीं ।
जथा सुखद सुख रूप तथा बिधि परस्यो तिनहीं ॥ ५८ ॥
तरनि-किरन ज्यौं मनि पषान सबही सों परसै ।
सूर्यकान्ति मनि बिना नाहिन कहुँ पावक दरसै ॥ ५९ ॥
सुनत चलीं ब्रजबधू गीत-धुनि को मारगु गहिं ।
भवन भीत द्रुम कुञ्ज-पुञ्ज कितहूँ अटकीं नहिं ॥ ६० ॥

पाठान्तर—१ छवि सों फूले और फूल । (दूसरा पाठ) छवि सों फलफूल अतुल
२ मनहु सरद की छपा छबीलि विहँसत आई ।
३ रितुराज । ४ अरुन आ घर मैं । ५ अधरन रस
६ पुनि मोहन सौं मिली कछू कलगान कियो अस । बरस्यो

नाद-अमृत को पन्थ रँगीलो सूछम भारी।

तिहिं[2] ब्रजतिय भल चलैं आन कोउ नहिं अधिकारी ॥६१॥

जे रहि[3] गईं घर अति अधीर गुनमय सरीर बस।

पुण्य पाप प्रारब्ध सच्यौ तन नहिन पच्यौ रस ॥ ६२ ॥

परम दुसह श्री कृष्ण बिरह दुख व्याप्यौ तिन मैं।

कोटि बरस लगि नरक भोग अघ भुगते छिन मैं ॥ ६३ ॥

जियँ पिय को धरि ध्यान तनिक आलिङ्गन किय जब।

कोटि स्वर्ग सुख भोग छीन कीने मङ्गल सब ॥ ६४ ॥

इतर[6] धातु पाहनहिं परसि कञ्चन ह्वै सोहै।

नन्द-सुअन सो परम-प्रेम यह अचरज को है ॥ ६५ ॥

तेउ पुनि तिहि मग चली रँगीली तजि गृह-सङ्गम।

जनु पिंजरनि ते उड़ छुड़े नव प्रेम-बिहङ्गम ॥ ६६ ॥

कोउक तरुनि गुनमय सरीर तनँ सहित चली उकि।

मातु पिता पति बन्धु रहे झुकि झुकि न रहीं रुकि ॥ ६७ ॥

सावन-सरित न रुकहि करै जौ जतन कोउ अति।

कृष्ण हर्यो जिनको मन ते क्यों रुकहिं अगम गति ॥ ६८ ॥

सुद्ध जोति-मय रूप पाँच भौतिक तें न्यारी।

इनहिं कहा कोउ गहै जोति सी जगत उज्यारी ॥ ६९ ॥

जदपि कहूँ के कहूँ बधुनि आभरन बनाए।

हरि-पिय पैं[9] अनुसरत जहीं के तहिं चलि आए ॥ ७० ॥

चलत अधिक छवि फबी स्रवन मैं कुण्डल झलकैं।

साङ्कित लोचन चपल ललितं-छवि बिलुलित अलकैं ॥ ७१ ॥

पाठान्तर—१ राग-अमृत। २ तिहिं मग ब्रज तिय चलैं।

३ रुकि। ४ भोग्यौ।

५ पुनिरञ्चक धरि ध्यान पियहिं परिरम्भ दियौ जब।

६ पीतर (दूसरा पाठ) धातु पात्र ७ रति सहित चलीं टुक

८ कोटि। ९ पन्थ। १० चाहतहैं।

कहुँ[1] दिखियत कहुँ नाहिँ सखी बन बीच बनीँ यौँ ।
  बिजुरिन की सी छटा सघन बन माँझ चली ज्यौँ ॥ ७२ ॥
आइ[2] उमगि सां मिलीँ रँगीली गोपबधू अस ।
  नन्द-सुअन सागर सुन्दर सोँ प्रेमनदी जस ॥ ७३ ॥
कृष्ण[3] तुष्टिकर कर्म करैँ जो आनि प्रकारा ।
  फल बिभचारि न होत होँय सुख परम अपारा ॥ ७४ ॥
परम भागवत रतन रसिक जु परीच्छित राजा ।
  प्रश्न कर्यो रस पुष्ट करन निज सुख के काजा ॥ ७५ ॥
परम धरम को पात्र जानि जग को हितकारी ।
  उदरदरीँ मेँ करी कान्ह जाकी रखवारी ॥ ७६ ॥
जाको सुन्दर श्याम कथा छिन छिन नई लागे[4] ।
  ज्यौँ लम्पट पर-जुवति बात सुनि अति अनुरागे ॥ ७७ ॥
अहो मुनि क्यौँ गुनमय सरीर परिहरि पाए हरि ।
  जानि भजे कमनीय कान्ह नहिँ ब्रम्ह भाव करि ॥ ७८ ॥
तब कह्यौ श्री शुकदेव देव यह अचरजु नाहीँ ।
  सर्व भाव भगवान कृष्ण जिनके हिय माहीँ ॥ ७९ ॥
परम दुष्ट सिसुपाल बालपन तेँ निन्दकु अति ।
  जोगिन्द्रन कौँ दुर्लभ सुलभहिँ पाई सोइ गति ॥ ८० ॥
ये हरि-रस-ओपी-गोपी सब तियनि तेँ न्यारी ।
  कवँल-नैन गोबिन्द-चन्द की प्रान पियारी ॥ ८१ ॥
तिनके नूपुर नाद सुने जब परम सुहाए ।
  तब हरि के मन नैन सिमिटि सब स्रवननि आए ॥ ८२ ॥
झनक मनक पुनि छबिली भाँति सब प्रगट भई जब ।
  पियके अँग अँग सिमटि मिलेँ[6] छबिले नैननि तब ॥ ८३ ॥

पाठान्तर—१, २ ये दोनों पद चन्द्रिका में नहीँ है ।
३ यह पद न तो चन्द्रिका मेँ है न मथुरावाली पुस्तक मे है ।
४ प्रिय । ५ कान्ह । ६ मिले हैं रसिक नैन तब

कुञ्जन प्रति निकसत सोभित सुन्दर आनन अस ।
    तमकि कुटी तें निकसत नव राका मयङ्क जस ॥ ८४ ॥
सुभग बदन तन चितवत पिय के नैन बने अस ।
    बहुत सरद ससि माहिं भरबरे द्वै चकोर जस ॥ ८५ ॥
अति आदरु करि लई भई पिय पैं ठाढ़ी अनु ।
    छबिली छटनि मिलि छेक्यौ मञ्जुल-घन मूरति जनु ॥ ८६ ॥
नागर गुरु नँदनन्द चन्द हँस मन्द मन्द तब ।
    बोले बाँके बैन प्रेम के परम ऐन सब ॥ ८७ ॥
उज्वल रस को यह सुभाव बाँकी छवि पावै ।
    बङ्क चहनि पुनि कहनि बङ्क अति रसहिं बढ़ावै ॥ ८८ ॥
कैकै बचन कहे नर्म कैक रसवर-कर्मनि पर ।
    एक कहे तियधर्म परम भेदक सुन्दर-वर ॥ ८९ ॥
ये सब नवल किसोरी भोरी भरीं नेह-रस ।
    तातें समुझि न परी करी पिय प्रेम बिबस अस ॥ ९० ॥
अहो तिया कहा जानि भवन तजि कानन डगरीं ।
    अर्द्ध गई सर्वरी कछुक डर डरीं न सगरीं ॥ ९१ ॥

पाठान्तर—१ यह पद बाबू कार्तिकप्रसाद की प्रति में है ।
इसका पाठ गोस्वामी किशोरीलाल जी की प्रति में ऐसा है—
कुञ्जन कुञ्जन निकसत सोभित वर आनन अस ।
तम की खानि त निकसत ह राका मयङ्क जस ॥
२ सब के मुख अवलोकत ।   ३ स्वच्छ ।
४ यह पद बाबू कार्तिक प्रसाद की प्रति में है ।
इस का पाठ गोस्वामी किशोरी लाल जी की प्रति में ऐसा है:—
दोहा—कइक बचन कहे नरम गरम कृष्ण बोलन पर ।
कइक कहे तिय धर्म मर्म बेधक सुन्दर वर ॥
५ गोस्वामी किशोरी लाल जी की प्रति में इसके आगे यह पद है:—
अनुचित धर्माचरन निगम निन्दित करिए मत ।
निज पिय पातिव्रत्य आन पति रति आरहु मत ॥

लाल रसिक के बङ्क बचन सुनि चकित भईँ यौँ ।
बाल-मृगनि की माल सघन बन भूलि परत ज्यौँ ॥ ९२ ॥
मन्द परसपर हसीँ लसीँ तिरछीँ अँखियाँ अस ।
रूप-उदधि इतरातिँ रँगीली मीन पन्ति जसे ॥ ९३ ॥
जब कह्यो पिय घर जाहु अधिक चित चिन्ता बाढ़ी ।
पुतरिन की सी पाँति रहि गईँ इक टक ठाढ़ी ॥ ९४ ॥
दुख के बोझ छबि सींव ग्रीव नै चलीँ नाल सी ।
अलक अलिन के भार निहुरि मनु कमल नाल सी ॥ ९५ ॥
हिय भरि विरह हुतासन स्वासन सँग आवत झर ।
चले हैँ कछुक मुरझाइ मधु भरे अधर बिम्ब बर ॥ ९६ ॥
तब बोलीँ ब्रज[3] नवल-बाल लालहिँ अनुरागी ।
गदगद सुन्दर गिरा गिरिधरहिँ मधुरी लागी ॥ ९७ ॥
अहो[4] हो मोहन प्राननाथ मोहन सुख दायक ।
निठुर[5] बचन जनि कहौ नहिँन ये तुम्हरे लायक ॥ ९८ ॥
जौ कोउ बूझै धरम तबहिँ तासौं कहिए पिय ।
बिनु ही बूझे धरम सुकृत कहिए दहिए हिय ॥ ९९ ॥
नेमँ धर्म जप तप ये सब कोउ फलहिँ बतावैँ ।
यह कहुँ नाहिँन सुनी जो फल फिरि धरम सिखावैँ ॥ १०० ॥
अरु यह तुमरौ रूप धरमि के धरमहिँ[9] मोहै ।
घर मेँ को तिय धरम भरम इहि आगे को है ॥ १०१ ॥

पाठान्तर १ मथुरा वाली पुस्तक में इसके आगे यह दोहा है:

दोहा । गोपिन सों हँसि हरि कह्यो सुन्दर सब को गाउ ।
हमेँ दरस तुम्हेँ भयो अपुने घर कौं जाउ ॥

२ अमित (दूसरा पाठ) नमित
३ ब्रजबाल लाल मोहन अनुरागी ।
४ अहो मोहन अहो प्रान नाथ सुन्दर सुख दायक । ५ क्रूर ।
६ कानक । ७ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
८ पिय । ९ भरमहिँ ।

नगन कौ धरम न रह्यो पुलकि तन चले ठौर तें ।
खग मृग अग बक वृच्छ कच्छ ते रहे कोरे तें ॥ १०२ ॥
त्यों[2] हीं पिय की मुरली जुरली अधर-सुधा-रस ।
सुनि निजु धरम न तजहिँ तरुनि त्रिभुवन माहिँ को अस ॥ १०३ ॥
अरु[3] तुम्हरे कर कमल महा दूती यह मुरली ।
राखे सब के धरम प्रेम अधरन-रस जुरली ॥ १०४ ॥
सुन्दरु पिय को बदन निरखि को सो जु न भूल्यौ ।
रूप सरोवर माहिँ सरद अम्बुज जनु फूल्यो ॥ १०५ ॥
कुटिल अलक मँनु अनबोले मधुकर मतवारे ।
तिन मैं मिलि गए चपल नयन पिया मीन हमारे ॥ १०६ ॥
चितवनि मोहन मन्त्र भौंह जनु मनमथ हाँसी ।
निपट ठगौरी आहि मन्द मृदु मादक हाँसी ॥ १०७ ॥
अधर सुधा के लोभ भईं हँम दासि तिहारी ।
ज्यों लुवधीं पद कमलनि कमला चञ्चल नारी ॥ १०८ ॥
जौ न देहु यह अधर[11]-अमृत सुनि हो मोहन हरि ।
करि हैं यह तन भसम विरह-पावक मां गिरि[12] परि ॥ १०९ ॥
तबै[13] पिय पदवी पाइ बहुरि धरिहैं सुन्दर अँग ।
निधरक ह्वै इह अधर[14]-अमृत पैहैं फिरि हैं सँग ॥ ११० ॥

पाठान्तर—१ गोस्वामी किशोरी लाल जी की प्रति में यह पद भी है:—
नगन खग औ मृगन को कैसो धर्म रह्यो है ॥
छाने ह्वै रहो पिया अब न कछु ज्ञान कह्यो है ॥
२ तैसिय । ३ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ॥
४ निरखि कै को नहि भूलै । ५ सरस, ६ फूल्यो,
७ मुख कमल मनो,
८ जिन महँ मिलि रहे लाल नैन मन मधुप हमारे ।
९ मुसकानि मृदु हाँसी । १० हरि,
११ अधरामृत तो सुनि सुन्दर हरि । १२ कूदि,
१३ पुनि पद पिय के पाइ । १४ अधरामृत फिरि पीवत हैं सँग ॥

सुनि गोपिनि के बचन प्रेम आँच सी लगी जिय ।
    पघलि चल्यो नव-नीत-मीत नव-नीत-सदस हिय ॥ १११ ॥
[2]विहँसि मिले नँदलाल निरखि व्रज बाल विरह बस ।
    जदपि आत्माराम रमत भए परम प्रेम बस ॥ ११२ ॥
विहरत[3] विपिन विहार उदार नवल नँद-नन्दन ।
    नव कुमकुम घन सार चारु चरचित तन[4] चन्दन ॥ ११३ ॥
अद्भुत साँवल अङ्ग बन्यौ[4] [5]अद्भुत पीताम्बरि ।
    मूरति[6] धरि सिङ्गार प्रेम अम्बर ओढ़े हरि ॥ ११४ ॥
बिलुलित[8] उर बनमाल लाल जब[9] चलत चाल बर ।
    कोटि मदन की भीर उठत इतं[10] लुठत पगन[11] तर ॥ ११५ ॥
गोपीजन[12] मन-मोहन मोहन लाल बने यों ।
    अपनी दुति के उड़गन उड़पति घन खेलत ज्यों ॥ ११६ ॥
ब्रज[13]-जुवतिनि-कर-मण्डित मण्डन करत फिरत बन ।
    अपनी दुति के उड़गन उड़पति मनु खेलत घन ॥ ११७ ॥
कुञ्जनि कुञ्जनि डोलैं[14] मनो घन ते घन आवैं[15] ।
    लोचन तृषित चकोरनि के चित चोंप बढ़ावैं[16] ॥ ११८ ॥
फूलनि-माल बनावैं[17] लाल पहिरि[18] पहिरावन[19] ।
    सुभग[20] सरोज सुधावैं[21] जाते[22] मनोज मनावैं[23] ॥ ११९ ॥
सुभग सरित के तीर धीर बलबीर गए तहँ ।
    कोमल मलय समीर छबिन की महा भीर जहँ ॥ १२० ॥

पाठान्तर—१ सुन्दर मोहन हिय, । २ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
३ बिलसत, ४ हैं, ५ पीत बसन । ६ मुकुट धरि,
७ जनु, ८ विगलित, ९ उर, १० पुनि गिरत,
११ चरनतर, १२ यह पद चन्द्रिका में नहीं है,
१३ यह पद मथुरा की पुस्तक में नहीं है ।
ऊपर वाले पद से यह बहुत मिलता है। १४ डोलत,
१५ आवत, १६ बढ़ावत । १७ बनाय,
१८ पहिरत, १९ पहिरावत, २० सुमन,
२१ सुधावर, २२ ओज, २३ बढ़ावत,

कुसुम[1] घूरि धूँधरी कुञ्ज छवि-पुञ्जनि छाई।
गुञ्जन मञ्जु अलिन्द बेनु जनुँ बजन सुहाई ॥ १२१ ॥
इत महँकाति मालती चारु चम्पक चित चोरत।
इत घनसारु तुसार मलय[2] मन्दारु झकोरत ॥ १२२ ॥
राँजबेल अरु एल गेल मृगमद की बेलि इत।
नूव[3] कुर्वक केवरा केतकी गन्ध-बन्धु नित ॥ १२३ ॥
इत लवङ्ग नवरङ्ग सङ्ग सेवती निवारी।
इत चन्दन महकाति माधुरी मधुर मतवारी ॥ १२४ ॥
इत तुलसी छवि हुलसी छाँड़ति परिमल लपटैं।
इत कुमोद आमोद गोद भरि भरि सुख दबटैं[4] ॥ १२५ ॥
उज्जल[5] मृदुल बालुका कोमल सुभग सुहाई।
श्री जमुना जू निज तरङ्ग करि यह जु बनाई ॥ १२६ ॥
बैठे तहँ सुन्दर सुजान सब[6] गुन निधान हरि।
बिलसत विविधि विलास रास[7] रस अति[8] हुलास भरि ॥१२७॥
परिरम्भनु[9] मुख चुम्बनु नीवी कच कुच परसन।
बरसत हिये[10] अनङ्ग रङ्ग नव घन ज्यौं बरसनें[11] ॥ १२८ ॥
तहँ[12] आयो यह मैनें[13] पञ्चसर कर हैं जाके।
ब्रह्मादिक[14] शिव जीति बाढ़ि रह्यौ अति मदु ताके ॥ १२९ ॥

पाठान्तर—१ यह पद चन्द्रिका में नहीं है। २ मिली।
३ इस पद और आगे वाले पद को मिला कर मथुरावाली प्रति में यह पद है—
" इत लवङ्ग नवरङ्ग एलची झेलि रही रस।
इत कुरवक (त ?) केवरा केतकी गंध बंध बस ॥ "
४ लूटै, ५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है।
६ सुख के निधान, ७ हास। ८ हिय,
९ परिरम्भनु चुम्बन कर नख नीवी कुच परसत।
१० प्रेम। ११ बरसत, १२ तब। १३ काम।
१४ ब्रह्मादिकन कों जीति।

निरखि ब्रजबधू सङ्ग रङ्ग भरे नव किसोर तन ।
　　हरि मनमथ कौं मथ्यौ उलटि वा मनमथ को मन ॥ १३० ॥
मुरछि पर्‌यौ तब मैन कहूँ धनु कहुँ निषङ्ग सर ।
　　लखि रति पति की दसा भीत भइ मारति उर कर ॥१३१॥
पुनि पुनि पियहिं अलिङ्गनि रोवति अति अनुरागी ।
　　मदन के बदन अमृत चुवाइ भुज भरि लै भागी ॥ १३२ ॥
अस अद्‌भुत पिय मोहन सों मिलीं गोप दुलारी ।
　　नाँहिं अचरजु जौ गरब करहिं गिरिधर जू की प्यारी ॥१३३॥
रूप भरीं गुन भरीं भरीं पुनि परम प्रेम रस ।
　　क्यौं न करैं अभिमान कान्ह भगवान किए बस ॥ १३४ ॥
जहँ नदि-नीर गँभीर तहाँ भलें भँवरी परई ।
　　छिल छिल सलिल न परै परै तौ छवि नहिं करई ॥ १३५ ॥
प्रेम-पुञ्ज बिरधन के काज ब्रजराज कुअँर पिय ।
　　मञ्जु कुञ्ज मैं नेकु दुरे अति प्रेम भरे हिय ॥ १३६ ॥

इतिश्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे रासक्रीडा वर्णने
रसिक जीवन प्राण नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पाठान्तर—१ निरखत । २ रङ्गभीने किशोर । ३ हरिजू तब मनमथ्यौ ।
४ खिसिबयर, ५ रति देखत पति दसा, ६ ज्यौं,
७ अचरज नाहिंन गरब होय, ८ भए,
९ नदी नीर, १० अति, ११ धरई,
१२ तनक । १३ चन्द्रिका में कहीं अध्याय नहीं लगाया है और मूल श्रीमद्भागवत में इस अध्याय का नाम "भगवतो रासक्रीड़ा वर्णन" लिखा है,

दूसरा अध्याय ।

ज्यौं कोउ परम मधुर मिश्री सौं खात निरन्तर ।
बीचि बीचि सन्धान तिकत रस अतिसय रुचिकर ॥ १ ॥
ज्यौं पटु पुट के दिए निपट हो रसहिं परत रँग ।
रञ्च बिरह के बढ़े प्रेम के पुञ्ज प्रगट अंग ॥ २ ॥
जिनके नैन निमेष ओट कोटिक जुग जाहीं ।
तिनके ग्रह बन कुञ्ज ओट दुख अगनित आहीं ॥ ३ ॥
थकि सी रहीं ब्रजबाल लाल गिरिधर पिय बिनु यों ।
निधन महाधन पाइ बहुरि ज्यौं जाइ भई त्यौं ॥ ४ ॥
ह्वै गईं बिरह बिकल तब बूझत द्रुम बेली बन ।
को जड़ को चैतन्य कछु न जानत बिरही जन ॥ ५ ॥
हे मालती हे जाति जूथि के सुनि हित दै चित ।
मान-हरन मन-हरन गिरिधरन लाल लखे इत ॥ ६ ॥
अहो केतकि इत कितहुँ तुम चितए पिय रूसे ।
किधौं नँद-नन्दन मन्द मुसकि तुमरेउ मन मूसे ॥ ७ ॥

पाठान्तर–१ मधुर वस्तु जो खाय निरन्तर सुख सो भारी ।
बीच बीच कटु अम्ल तिक्त लिए अति रुचिकारी ॥
२ अति, ३ नेसइ रञ्चक विरह प्रेम के पुञ्ज बढ़े अँग, ४ गनना नाहीं,
५ ठगी गई, ६ बहुरि फिरि जात भयो ज्यों
७ इसके ऊपर मथुरा की प्रति मे यह दोहा है—
कुञ्ज कुञ्ज ढूँढ़त फिरीं खोजत दीन दयाल ।
प्रान नाथ पाए नहीं बिकल भईं ब्रजबाल ॥
८ अहो मालती जाति जूथि के, ९ इत, १० लखे,
११ हे केतकी कितहूँ इतन चितए पिय रूसे, १२ मुरि मुसकानि,

अहो मुकताफल बेलि धरें मुकुता फल माला ।
दखे नैन बिसालौ मोहन नँद के लाला ॥ ८ ॥
अहो मन्दार उदार वीर करवीर महामति ।
देखे कहुँ बलबीर धीर मन-हरन धीर गति ॥ ६ ॥
अहो चन्दन सुख कन्दन दुख सब जरत सिरावहु ।
नन्दनँदन जग-बन्दन चन्दन हमहिँ मिलावहुँ ॥ १० ॥
अहो सुभग वन सुगंध पवन नैसुँक थिर है रहि ।
सुख के भवन दुख-दवन रवन कहुँ इत उत है लहि ॥११॥
बूझहु री इन लतनि फूलि रहिँ फूलनि सोहीं[10] ।
सुन्दर पिय के[11]र परस बिना असे[12] फूल न होंहीं[13] ॥ १२ ॥
हे सखि ये मृगबधू इनहिँ किन बूझहु अनुसारि ।
डहडहे इनके नैन अबैं[14]हीं कतहुँ चितए हरि ॥ १३ ॥
अहो चम्पक अहो कुसुम तुम्हें छबि सबसों न्यारी ।
नेकु बताय जु देव जहाँ हरि कुञ्जविहारी ॥ १४ ॥
अहो कदम्ब अहो अम्ब निम्ब क्यों रहे मौन गहि ।
अहो बट तुं[16]ङ्ग सुरङ्ग वीर कहुँ इ[17]त उलहे लहि ॥ १५ ॥
अहो असोक हरि सोक लोकमनि पियहिँ बतावहु ।
अहो पनस सुभ सर[18]स तीर्[19]थ सब मरत जियावहु ॥ १६ ॥
जमुन निकट के विटप पूछि भईं निपट उदासी ।
क्यों कहि हैं सखि महा कठि[20]न ये तीरथ-बासी ॥ १७ ॥

पाठान्तर—१ हे, २ त्रिसाल ३ मोहना, ४ हे,
५ हे चन्दन दुख दन्दन सब की जरन जुडावहु, ६ बतावहु,
७ थिर जु रही चलि. ८ इत ते चितये बलि ।
९ पूछोरी, १० ओई ११ के. १२ ऐसो,
१३ हाई, १४ अबहिँ कहुँ देखे हैं हरि,
१५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है, १६ बट उतङ्ग,
१७ तुम इत उत लहि, १८ सरस,
१९ मरत तिय अमृत पियावहु. २० कठोर,

हे जमुना सब जानि बूझि तुम हठहिँ गहत हौ।
    जो जल जग उद्धरन ताहि तुम प्रगट बहत हौ ॥ १८ ॥
अहो कमल सुभ बरन बरन कहु कहुँ हरि निरषे।
    कमलमाल बनमाल कमल कर अति ही हरषे ॥ १९ ॥
[3]अहो अवनी नवनीत-चोर चित-चोर हमारे।
    राखे [4]कैतहूँ दुराइ बतावहु प्रान पियारे ॥ २० ॥
[5]अहो तुलसी कल्यानि सदा गोविँद पद-प्यारी।
    क्यों न कहति तू नँद नन्दन सोँ दसा हमारी ॥ २१ ॥
जहाँ आवै तमपुञ्ज कुञ्ज गहवर तरु छाहीँ।
    अपने मुख चाँदने चलतिँ सुन्दरि तिन माहीँ ॥ २२ ॥
ईहिँ विधि बन घन बूझि ढूँढ़ि उनमन की नाईं।
    करन लगीँ मन हरन लाल लीला मन भाईं ॥ २३ ॥
मोहन लाल रसाल की लीला इनहीँ सोहैँ।
    केवल तनमय भईँ कछु न जानतिँ हम को हैँ ॥ २४ ॥
हरि की चलनि बोलिँ हरि की हरि कीसी हेरनि।
    हरि कीसी गाईं निरखन हेरन अम्बरै फेरनि ॥ २५ ॥
[13]हरि की सी बनि बन तेँ आवन गावन रस रङ्गी।
    हरि की सी गेंदु[14]कै रचन नचनें[15] [16]पुंनि होन त्रिभङ्गी ॥ २६ ॥
कोउँ[17] इक अम्बर को गिरिवर कर धर बोलत तब।
    निहर्डै[18]र इहि तर रहौ गोप गोपी गाइन सब ॥ २७ ॥

पाठान्तर १ यह पद चन्द्रिका मे नहीँ है,
२ यह पद चन्द्रिका मे नही है,
३ हे, ४ किँने, ५ हे, ६ सुवन, ७ विया,
८ बन ९ की सी। १० विलोकनि, ११ गाइनि घेरन।
१२ यह पद। १३ हरि की सी बन तेँ आवनि गावन भनि रसरङ्गी।
१४ केँदुक। १५ सचन। १६ नित ललित।
१७ कोउ गिरि वर अम्बर को कर धरि बोलत हैँ तब।
१८ निडरकै ह्वै रहौ ग्वाल।

भृङ्गी भय तेँ भृङ्ग होत ईकु कीटु महा जड़ ।
कृष्ण भगति तेँ कृष्ण होनै कछु नहिँ अचरजु बड़ ॥ २८ ॥
तब पायो पिय पद-सरोज को खोज रुचिर तहँ ।
जर्व गद अङ्कुस कुलिस कमल छबि जगमगात जहँ ॥२९॥
जो रज शिव अज कमला खोजत जोगी जन हिय ।
ते सबै बन्दन करन लगीँ सिर धरन लगीँ तिय ॥ ३० ॥
देखैँ ढिग जगमगत तहाँ प्यारी तिय के पग ।
चितय परस्पर चकित भईँ जुरि चलीँ तिहीँ मग ॥३१॥
चकित भईं सब कहतिँ कौन यह बड़ भागिनि अस ।
परम कंन्त एकान्त पाय पीवत जु अधर रस ॥ ३२ ॥
आगे चलि पुनि अवलोकी नव पल्लव सैनी ।
जहँ[11] पिय कुसुम सुसुम लै सुकर गुही है बेनी ॥ ३३ ॥
तहँ पायो इक मञ्जु मुकुर मनि जटित विलोलै ।
तिहि बूझैँ ब्रजबाल विरह भरि मोउ न बोलै ॥ ३४ ॥
तर्क करत अपमाहिँ[12] अहो[13] यह क्यों कर लीन्हौ ।
तिन[14] मेँ तिनके हिय की जानि उन उत्तर दीन्हौ ॥ ३५ ॥
बेनी गूहन समय छँबिलो[15] पाछेँ बैठो जब ।
सुन्दर बदन बिलोकनि पिर्य के अन्तरु भयो तब ॥ ३६ ॥
तातेँ मञ्जुल मुकर सुकर लै बाल दिखायो ।
श्री मुख को प्रतिविम्ब सखी तव सनमुख आयो ॥ ३७ ॥

पाठान्तर -१ वह । २ प्रेम । ३ होँय ।
४ और दर अङ्कुस कमल कलस धुज जगमगात तहँ ।
५ सोचत । ६ सो रज । ७ निरखें ।
८ प्रिय । ९ भाँत । १० इक ।
११ जहँ पिय निज कर कुसुम की सुन्दर गूथी बेनी ।
१२ आपुस में । १३ कह्या
१४ कोऊ तिन में हिय को उतर दीनो । १५ छैल ।
१६ सुख को ।

धन्न कहत भईं ताहि नाहिं कछु मन में कोपीं ।
    निरमच्छर जे सन्त तिनकी चूड़ामणि गोपीं ॥ ३८ ॥
ईन नीके आराधे हरि इस्वर बर जोई ।
    तातें निधरक अधर सुधारस पीवत सोई ॥ ३९ ॥
सो[2]ऊ पुनि अभिमान भरी जब कहन लगी तिय ।
    मोतें चलो न जाय जहाँ तुम चलन चहत पियँ[3] ॥ ४० ॥
आगें चलि पुनि तनक दूरि देखी सो ठाढ़ी ।
    जासों सुन्दर नन्द कुँअर पिय अति रति बाढ़ी ॥ ४१ ॥
गोरे तन की जोति छूट छबि छाय रही धर ।
    मानहु ठाढ़ी कुअँरि सुभग कञ्चन अवनी पर ॥ ४२ ॥
जनु घन तेँ बिजुरी बिछुरि माननि तनु काछें ।
    किधौं चन्द्र सों रूसि चन्द्रिका रहि गइ पाछें ॥ ४३ ॥
[7]तनकी जोति जगमगे छूटि रही छाजत है धर ।
    मानहु ठाढ़ी ससि बिनु रोहिनि ससि मण्डल पर ॥ ४४ ॥
वा सुन्दरि की दसा देखि कहत[8] न बनि आवै ।
    बिरह भरी पुतरी जु होइ तौ कछुं छबि पावै ॥ ४५ ॥
नयननि तें जलधार हार धोवत धर धावत ।
    भवँर उड़ाइ न सकति बास बस मुख ढिग आवत ॥ ४६ ॥
हा सि हा स्मि पिय महाबाहु यों बदति अकेली ।
    महा-बिरह की धुनि सुनि रोवत खग द्रुम बेली ॥ ४७ ॥

पाठान्तर—१ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
२ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
३ यहाँ पर मथुरावाली प्रति में यह दोहा है: —

पिया सङ्ग एकान्त रस विलसत राधानारि ।
कन्ध चढ़न हारसों कह्यो यानें न भी मुरारि ॥

४ सुवन । ५ मनो घन , ६ छूटि,
७ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है,
८ कछु कहत न आवे, ९ आति, १० मृग,

दौरि भुजनि भरि लईं सबनि लै लै उर लाईं ।
मनहुँ महा निधि खोइ मध्य आधी निधि पाई ॥ ४८ ॥
कोउ चुम्बति मुख कमल कोऊ भुअ भाल सु अलकैं ।
जा महँ पियै सङ्गम को मञ्जुल श्रमकन झलकैं ॥ ४९ ॥
पोंछति अपने अञ्चल रुचिर दृगञ्चल तीकं ।
पीक भरे जु कपोल लोल रद छद जहँ पी के ॥ ५० ॥
जितँ तित तें सब महुरि बहुरि जमुना तट आईं ।
जहँ नँदनन्दन जग-बन्दन पिय लाड़ लड़ाईं ॥ ५१ ॥

इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे रास क्रीड़ायां नन्ददास
कृतौ गोपी विश्लेष वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

पाठान्तर—१ धाइ, २ बीच, ३ भुज,
४ सुन्दर श्याम, ५ पोंछत अपने अञ्चल सों दृग चञ्चल तीके,
६ मुख चन्द सों. ७ ताहिले तहां ते.
८ चन्द्रिका में अध्याय नहीं लगा है मूल श्री मद्भागवत में इस
अध्याय का नाम " कृष्णान्वेषणं " लिखा है,

तीसरा अध्याय।

कहन लगीं अहो कुँअर कान्ह ब्रज प्रगटे जबतें।
अवधि भूत इन्द्रादि इहाँ क्रीड़त हैं तब तें ॥ १ ॥
सब कों सब सुख बरसत सरसत बड़ हित कारी।
तिनें माँहिं पुनि ये गोपबधू पिय निपट तिहारी ॥ २ ॥
नैन मूँदिबो महा शस्त्र लै हाँसी हाँसी।
मारत हौ कत सुरत नाथ बिनु मोल की दासी ॥ ३ ॥
विष जल तें ब्याल तें अनल तें चपला झरतें।
क्यों राखी नहिं मरन दई नागर नगधर तें ॥ ४ ॥
जनु तुम जसुदा सुत न भये पिय अति इतराने।
विश्व कुसल के काज बिधि न बिनती के आने ॥ ५ ॥
अहो मीत अहो प्राननाथ यह अचरज भारी।
अपननि जौ मारिहौ करिहौ काकी रखवारी ॥ ६ ॥
जब पसु चारन चलत चरन कोमल धरि बन में।
सिल त्रिन कण्टक अटकत कसकत हमरे मन में ॥ ७ ॥
जब पुनि बन को जात सौंतें जुग सम बीतत छिनु।
दिन बीतत जिहि भाँति हमहिं जानति पिय तुम बिनु ॥ ८ ॥
जब पुनि बिपिन तें आवत सुन्दर आनन देखें।
तबै इन विधिना कूर रेंची लै नैन निमेखें ॥ ९ ॥

पाठान्तर—१ अवध २ इन्द्रादिक अलकुल ह्वै रहे तब लें
३ सों, ४ सासि जो बढत हितकारी
५ फांसी, ६ दामिनि, ७ बिधिना, ८ मित्र,
९ अपने जन को मारि, १० मिल तिन कण्टक अण्टक कसकत
११ पुनि कानन को, १२ सहस जुग बीतत छिन
१३ कानन १४ तहा, १५ कर धरी,

प्रनत मनोरथ करैन[1] चरन सरसीरुह पी के ।
[2]वश्चंक रुचक काहि न हरियै दुख या ही के ॥ १० ॥
[3]कहाँ हमारी प्रीति कहाँ तुमरी निठुराई ।
मनि पखान सों खैंचि दई सो कछु न बसाई ॥ ११ ॥
[4]फनी फनन पर अरपे डरपे नहिन नेकु तब ।
[5]छबिली छातिन धरत डरत कत कुँअर कान्ह अब ॥ १२ ॥
[6]हम समझीं यह तुम जु डरत ब्रजराज दुलारे ।
कोमल चरन सरोज उरोज कठोर हमारे ॥ १३ ॥
[7]हरें हरें धरि पीय हमहिं तौ प्रान-पियारे ।
[8]कत अटवी महि अटत गड़त तृन [9]कूट [10]नें न्यारे ॥ १४ ॥

[11]इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे रासक्रीड़ायां नन्ददास
कृतौ गोपिका गीत उपालम्भ वर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ।

पाठान्तर–१ करत , २ कहा घटि जैहे नाथ हरत दुख हमरे जी के,
३ यह पद चन्द्रिका मे नहीं है , ४ फन फन , ५ छतियन पर पग ,
६ जानत है पिय , ७ सने सने धरिए पिय हमको , ८ कित ।
९ कूर्प , १० अन्यारे , ११ चन्द्रिका मे इति श्री नहीं लगाया है
मूल श्रीमद्भागवत मे इस अध्याय का नाम "गोपी गीत" लिखा है ,

येहि[3] विधि प्रेम-सुधा-निधि में[2] अति बढ़ी कलोलैं।
ह्वै गईं बिह्वल बाल लाल सों अँल बल[1] बोलैं ॥ १ ॥
तब तिनहीं में तें[4] निकसे नँदनन्दन पिय यों।
दृष्टिबन्ध कै दुरै बहुरि प्रगटै नटवर ज्यौं ॥ २ ॥
पीत बसन बनमाल[5] बनी मञ्जुल मुरली हथ।
मन्द मधुर[6] तर हँसत निपट मनमथ के मन मथ ॥ ३ ॥
पियहिं[7] निरखि तिय बृन्द उठीं सब इकै बार यों।
परिघट आए प्रान बहुरि उझकत इन्द्री ज्यों ॥ ४ ॥
दौरि लपटि गईं ललित पियहिं[8] कहत न बनि आवहिं।
मीनें उछरि जस परहि पुलहिं पुनि पानी पावहिं[9] ॥ ५ ॥
महा छुभित कों[10] जैसे असन सों प्रीति सुनी है।
ताहू तें अनगुनी सहस [11]पुनि कोटि गुनी है ॥ ६ ॥
[12]कोउ चटपटि सों उर लपटी कोउ कर वर लपटी।
कोउ गरै लपटी कहति भले [13]भलै कान्हर कपटी ॥ ७ ॥
[14]कोउ नगधरवर पिय की गहि गहि परिकर पटकी।
जनु नव घन तें सटकि [15]दामिनी छटा सों अटकी ॥ ८ ॥
[16]कोउ पिय भुज लिपटाय रहीं नव नारि नवली।
जनु सुन्दर सिङ्गार विटप लपटी छवि वेली ॥ ९ ॥
कोउ [17]कँमल-पद कमल कुचन [18]बिच [19]राखि रही यों।
परम कृपन धन पाइ हियें[20] सों लाइ रहत ज्यों ॥ १० ॥

पाठान्तर—१ आपन, २ बाढ़ गई अधिक कलोल, ३ यहि विधि,
४ प्रगट भए, ५ धरे, ६ मुसक्यात ७ फिर,
८ लाल मुख कहत न आव, ९ यह तुक मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है, १० भोजन सों जो। ११ किधौं।
१२ कोउ चट पट तों कस लपटी कोउ उर वर लपटी। कोउ गर लपटाय कहत भल जू कान्हर कपटी। १३ जू।
१४ कोउ नागर नग धर कों गहि रही कोउ कर पटकी।
१५ दामिनि दामन अटकी।
१६ कोउ पिय भुजनि सों लटकी अटकी नारि नवला।
१७ कोमल। १८ पर, १९ लाइ, २० छाति,

कोउ पिय रूप नयन भरि उर में धरि धरि ध्यावति ।
मधु माँखी लौं डीठि दुहूँ दिसि अति छवि पावति ॥ ११ ॥
कोउ दसननि दलि अधर बिम्ब गोविन्दहिं ताड़ति ।
कोउ इक चारु चकोर चखनि मुखचन्द निहारति ॥ १२ ॥
बैठे पुनि जँहि पुलिन परम आनन्द भए हैं ।
छबिली अपने छादन छबि सों बिछाइ दए हैं ॥ १३ ॥
कहुँ काजल कहुँ कुम कुम कहुँ कहुं पीक लीक वर ।
तहँ राजत नँदनन्द कन्द कन्दर्प दर्प हर ॥ १४ ॥
जोगी जन बन जाइ जतन करि कोटि जनम पचि ।
अति निर्मल करि करि राखत हिय रुचि आसन रचि ॥१५॥
कछु घिनात तहँ जात नवल नागर मोहन हरि ॥
ब्रज की तियन के अम्बर पर बैठे अति रुचि करि ॥ १६ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जदपि इकली ठकुराई ।
ब्रज देविन की सभा साँवरे अति छबि पाई ॥ १७ ॥
ज्यों नव दलनि कमल मण्डलहिं कर्णिका भ्राजै ।
त्यों सब गोपिन सनमुख सुन्दर श्याम विराजै ॥ १८ ॥
बूझनि लगि ब्रज-जुवति जुगतिहीं जुगति पियहिं तब ।
प्रीति रीति की बात मनहिं मुसकाति जाति सब ॥ १९ ॥
इक भजतनि कों भजैं एक अनभजतनि भजहीं ।
कहां कान्ह ते कवन आहिं जे दुहुअनि तजहीं ॥ २० ॥

पाठान्तर - १ मग । २ आवत ३ मधुर मिष्ट ज्यों वृष्टि दसा दिसि ।
४ दिए । ५ नन । ६ चारु । ७ तिहि ।
८ माँझ । ९ लगी । १० वृन्द । ११ कोटि ।
१२ अनेंत जतन पाच । १३ राखि हिये मे आसन रचि रचि ।
१४ कछुछिन तहां न जात । १५ सुन्दर । १६ जुवतिन
के आसन पर ऐसे बैठे रुचि कार । १७ एकहि ।
१८ जों नव मण्डल मध्य कमल कर्णिकाभ्राजे । १९ तियन के ।
२० बूझन लगीं नवल बाला नंदलाल पियहि तब । २१ विन भजतनि ।

जे[1] भजतन को भजैं सजैं अपने स्वारथ हित ।
    जैसे पसु जु परस्पर चाटत सुख मानत चित ॥ २१ ॥
जे[2] अन भजतनि भजैं तौन धरमी सुखकारी ।
    जैसे मातु पितादि करैं सुत की रखवारी ॥ २२ ॥
जे[3] दुहुअनि कों तजैं अहैं ते गुरु द्रोही मैं ।
    आत्मराम कै पूर्ण काम कै अकृतज्ञी हैं ॥ २३ ॥
[4]अकृतज्ञी हों नाहिं तुमरे चित प्रेम बढ़ावन ।
    निधन महाधन लाभ सरिस चित चोप लगावन ॥ २४ ॥
जदपि जगत-गुरु नागर[5] जसुमति-नन्द दुलारे ।
    पै[6] गोपियन के प्रेम अग्र अपने मुख हारे ॥ २५ ॥
तब बोले पिय नव किसोर[7] हम ऋनी तिहारे ।
    अपुने हियतें दूरि करौ सब दोस हमारे ॥ २६ ॥
तुम जु करी सो कोउ न करी है नवल किसोरी ।
    लोक वेद की सुदृढ़[8] सिंखला तृन सम तोरी ॥ २७ ॥
कोटि कलप लगि तुम प्रति प्रति-उपकार करौं जौ ।
    हे मनहरनी तरुनी उऋन[9] न होउँ तबौं तौ ॥ २८ ॥
सकल विश्व अप बस करि सो माया सोहति है ।
    मोह-मई[10] तुम्हरी माया सोइ मोहि मोहति है ॥ २९ ॥

[11]इति श्री भागवते महा पुराणे दशम स्कन्ध रास क्रीड़ायां गोपी
विरहतापोपशमन नाम चतुर्थोऽध्यायः

पाठान्तर १, २, ३, ४ ये सब पद मथुरा की पुस्तक में नहीं है ।
५ नगधर । ६ तदपि गोपिन के प्रेम विवस अपने मुख हारे ।
७ ब्रजराज कुँवर । ८ दृढ़ सांकर । ९ अऋनी नाहि होउ तबौ तौ । १० प्रेम-मई । ११ चन्द्रिका में इति श्री नहीं लगाया है मूल श्रीमद्भागवत में इस अध्याय का नाम ' गोपी सान्त्वन ' लिखा है ।

पांचवां अध्याय ।

सुनि प्रिय के रस बचन सबनि[1] गसि छांड़ि दए हैं ।
    बिहंसि[2] आपने उर[3] सों लाल लगाय लए हैं ॥ १ ॥
[4]कलपवृच्छ जड़ सुनिय सकल चिन्तानि फल दायक ।
    यह ब्रजराज कुमार सबै सुख दायक नायक ॥ २ ॥
[5]कोटि कलपतरु लसत बसत पद पङ्कज छाहीं ।
    कामधेनु पुनि कोटि कोटि बिलुठत रज माहीं ॥ ३ ॥
वै पिय भए अनुकूल तूल कोऊ न भयो अब ।
    निरवधि सुख के मूल सूल उनमूल कर्यो सब ॥ ४ ॥
[6]फिरि आए तिहि सुरतरु तर मोहन गिरिवर धर ।
    आरम्भित अद्‌भुत सुरास उहि कमल-चक्र पर ॥ ५ ॥
[7]एक बार ब्रज बाल लाल सब चढे जोर कर ।
    नव[8] तन इत उत होत सबै निर्तत विचित्र बर ॥ ६ ॥
[9]मनि दर्पन सम अवनि रमनि तापर छबि देहीं ।
    बिथुरितें[10] कुण्डल अलक तिलक झुकि[11] झाईं लेहीं ॥ ७ ॥
[12]एकहि मूरति ललित लाल आलात की नाईं ।
    सबके अंसन धरी सावँर बाँह सोहाईं ॥ ८ ॥
कमल कर्णिका मध्य जु स्यामा[13] स्याम बनी छबि ।
    द्वै[14] द्वै गोपियन विच पुनि मण्डल माहिं लखे फबि ॥९॥

पाठान्तर—१ क्रोध सब । २ विहँसत । ३ कण्ठन ।
४ यह पद चान्द्रिका में नहीं है । ५ यह मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है । ६ तब आए तिहि सुर तरु मोहन गिरिवर धर बर ।
७ इकै बार ब्रज बाल फिरति जा पर सहसन बर ।
निहुरनि कतहूँ होइ सबै नर्तन विचित्र बर ।
८ पुनि । ९ अवनी रमनी अति । १० बिलुलित ।
११ झुइ झलकत । १२ यह पद चान्द्रिका में नहीं है ।
१३ राधिका लाल ।
१४ द्वंद्व गोपिन बीच जु मोहन लाल बने फबि ।

मूरति एक अनेक लगेत अद्भुत सोभा अस ।
अविकल[2] दरपन मण्डल माहिँ विधु आनि परत जस ॥ १० ॥
सकल[3] तियन के मध्य सावँरो पिय सोभित अस ।
रत्नावलि मधि नील मनी अद्भुत झलकै जस ॥ ११ ॥
नव मर्कत-मनि स्याम कनक-मनिमय ब्रजबाला ।
वृन्दावन गुँन[4] रीझि मनहुँ पहिराई माला ॥ १२ ॥
नूपुर[5] कङ्कन किङ्किन करतल मञ्जुल मुरली ।
ताल मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग[6] बीना धुनि जुरली ॥ १३ ॥
मृदुल[7] मुरज टङ्कार ताल झङ्कार मिली धुनि ।
मधुर जन्त्र की तार भवँर गुञ्जार रली पुनि ॥ १४ ॥
मिलि[8] जु भई इक अद्भुत धुनि तिहि सुनि सुनि मोहे ।
सुर नर गन गन्धर्व कछु न जानत हम को हे ॥ १५ ॥
पवन[9] थक्यौ ससि थक्यौ थक्यौ उड़ मण्डल सिगरौ ।
पाछे रवि रथ थक्यौ चलै नहिँ आगे डगरौ ॥ १६ ॥ ॥
अनाधिकारी जिते तिते सुनि सुनि मुरझाए ।
अद्भुत रास-विलास सुरस देखन नाहिँ पाए ॥ १७ ॥
वृन्दावन को त्रिगुन[10] पौन सों[11] बिजन बिलोलै ।
जहँ जहँ श्रमित विलोकैं तहँ तहे रँगे[12] भन्यो डोलै ॥ १८ ॥
थकित[13] सरद की रजनी[14] न जनी केनक बाढ़ी ।
विहरत सजनी स्याम जथा रुचि अन्तर[15] बाढ़ी ॥ १९ ॥

पाठान्तर—१ देखि । २ मंजुल मुकर मण्डली बहु प्रतिबिम्ब बधू जस ।
३ यह पद चन्द्रिका में नहीं है । ४ को ।
५ बाजत नूपुर करतल कङ्कन मञ्जुल मुरली ।
६ सबै एकै सँग जुरली । ७ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
८ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है ।
९ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है । १० त्रिबिध ।
११ सुख । १२ रस । १३ रीझ । १४ राग ।
१५ अतिसँवि बाढ़ी ।

राग रागिनी मण्डल ढिग तहँ ठाढ़े गावत ।
ताल पखावज आवज बीना मुरज बजावत ॥ २० ॥
सावँरे प्रिय सँग निर्त्तत चञ्चल ब्रज की बाला ।
मनों[2] घन मण्डल खेलत मञ्जुल चपला माला ॥ २१ ॥
ललना[3] अद्भुत राग लेत सोभित सोभा यों ।
सुभग घटा पर छटा छबीली थिरक रहत ज्यों ॥ २२ ॥
उड़े[4] अरुन पट बास रास मण्डल मण्डन अस ।
मनों सघन अनुराग घटा उमड़त घुमड़त रस ॥ २३ ॥
ताकी[5] घूँघरि-मत्त मधुप बन भ्रमत जु एसें ।
प्रेम जाल के गोल कछुक कवि उपजत जैसे ॥ २४ ॥
श्रम[6] भरि सुन्दर बुन्द रङ्ग भरि कहुँ कहुँ बरसत ।
प्रेम भजत जिनके जिय तिनके हिय अति सरसत ॥ २५ ॥
पिय के मुकुट की लटकनि मटकनि[7] मुरली रव अस ।
कुहकि कुहकि मनों[8] नाचत[9] मञ्जुल मोर[10] भर्‍यो रसै[11] ॥ २६ ॥
अपनअपनी[12] जत गती भेद नर्त्तन लागति जब ।
अलि गँधर्व-नृप से सब सुन्दर गान करत तब ॥ २७ ॥

पाठान्तर - १ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है ।
२ जनु घन मण्डल मधि खेलति है दामिनि माला ।
३ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है ।
४ उड़गन अरुन अबीरन अद्भुत रास मण्डल ऐसी ।
मनहु सघन अनुराग घटा घन घुमड़ात जैसी ॥
५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
६ श्रम जल बिन्दुक सुन्दर रङ्ग भरि कछु कछु सरसत ।
प्रेम भक्ति बिरला जिन के तिन के हिय अति सरसत ॥
७ मुरली नाद भरी रस । ८ पै । ९ बाजत ।
१० सोर । ११ अस ।
१२ अप अपनी जाति भेद तहँ नृत्तन लगीं सब ।
गन्धर्व मोहे ता छिन सुन्दरि गान करत जब ॥

कबहुँ[1] परस्पर निर्त्तत-लटकनि मण्डल डोलनि।
    कोटि अमृत सम मुसकानि मञ्जुल ततथेइ बोलनि ॥ २८ ॥
कल[2] किङ्किन गुञ्जार तार नूपुर बीना पुनि।
    मृदुल मुरज टङ्कार भवँर झङ्कार मिली धुनि ॥ २६ ॥
पद[3] पटकनि भू मटकनि चटकनि कठतारन की।
    गज-गति मुसकनि झलकनि कल कुण्डल हारन की ॥ ३० ॥
छबिली[4] तियन के पाछेँ आछेँ बिलुलित बेनी।
    चञ्चल रूप लतनि सँग डोलति जनु अलि सैनी ॥ ३१ ॥
सिरतेँ कुसुम जु सुन्दर बरसत अति आनँद भरि।
    जनु पद गति पर रीझि अलक पूजति पुहपनि करि ॥ ३२ ॥
कोऊ[5] तहां कर बांधि नृत्य जब करन लगीं तिय।
    मनौं करतल लट फिरत देखि कै लट्टू होत पिय ॥ ३३ ॥
कोउ नायक के भेद भाव लावन्य रूप सब[6]।
    अभिनय करि दिखरावति गावति गुँन पिय के तब ॥ ३४ ॥
तब[8] नागर नँदनन्द निपटही होत बिबस अस।
    निज प्रतिबिम्ब बिलास निरखि सिसु भूलि रहत जैस ॥३५
रीझिं[11] परस्पर वारत अम्बर भूषन अँग के।
    और तबहिं बनि रहत तहां अद्भुत रँग रँग के ॥ ३६ ॥

पाठान्तर—१ छबि सों नृत्तति लटकति मटकति मण्डल डोलत।
    कोटि अमृत मुसकाति मृदुल ता थेइ थेइ बोलत ॥
२ यह पद मथुरा वाली पुस्तक मे नहीं है।
३ नूपुर पद पद पटकनि चटकनि कठतारन की।
    लटकनि मटकनि झलकनि कल कुण्डल हारन की।
४ सोंचत सुभग सुबेसन।
५ कोउ सखि कर पर तिरप बाँधि निर्त्तत नागर तिय।
    मानो करत लट्टू फिरत लखि लट्टू होत पिय ॥
६ बस।   ७ सब।   ८ जस।
९ तब नन्द लाल चाह चित चकित भए यों।
१० ज्यों।   ११ यह पद चन्द्रिका मे नहीं है।

कोउ मुरली सँग रेली रँगीली रसहिँ बढ़ावत ।
सुँघर पिया संग गावति सुन्दरि अति छबि पावत ॥ ३७ ॥
कोउँ तिनहूँ तेँ अधिक अमिस्रित सुर जुन गति नइ ।
सब कोँ छैंकि छबीली अद्भुत गान करत भइ ॥ ३८ ॥
अद्भुत रस रह्यो रास गीत धुनि सुनि मोहे मुनि ।
सिला सलिल ह्वै चली सलिल ह्वै रह्यो सिला पुनि ॥ ३९ ॥
तौहि साँवरो कुँअर रीझ हँसि लेत भुजन भरि ।
चुम्बन करि सुख-सदन बदन तेँ दै तमोल हरि ॥ ४० ॥
जग मेँ जो सङ्गीत रीत सुर मुनि रीझत जिहि ।
सो ब्रज तियन को सहज गवन अद्भुत गावत तिहि ॥ ४१ ॥
जो ब्रज देवी निर्त्तत मण्डल रास महा छवि ।
सो रस कैसे बरनि सके इहे ऐसो को कबि ॥ ४२ ॥
रोग रागिनी समुझन को बोलिबो सुहायो ।
सो कैसे कहि आवै जो ब्रज-देविन गायो ॥ ४३ ॥
ग्रीव ग्रीव भुज मेलि केलि कमनीय बढ़ी अति ।
लटकि लटकि निर्त्तति पियै सों मनमथ मन्थन-गति ॥ ४४ ॥
गण्डैन सों मिलि ललित गण्ड मण्डल मण्डित छवि ।
कुण्डल सों कच उरुझे मुरझै जहँ बड़ड़े कवि ॥ ४५ ॥

पाठान्तर—१ मिली । २ कोउ मुरली कोँ छैंकि छबीली अद्भुत गावति।
३ कोउ उनतेँ आन गावन सुर लय लेत तान नइ ।
सब सङ्गीतु छकेँ जु सुन्दरीँ गान करत भइ ।
४ सिला होइ गयापुनि । ५ बहु भांतन साँ रीजि कुँवर बर लई
भुजन भरि । ६ हरि । ७ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
८ यह पद चन्द्रिका मे नहीं है । ९ यह पद चन्द्रिका में
नहीं है । १० कापै कहि आवति गति ।
११ भुज दण्डनि सों मिलति ललित मण्डल निर्त्तत छवि ।
कुण्डल कच सो उरझ सुरझि नाहिँ बरनि सकै कवि ॥

अद्भुत रस रह्यो रास कहत कछु नहिं कहि आवै ।
ज्यों मूकैं रस को चसको मनहीं मन भावै ॥ ४६ ॥
जद्यपि रमा रमनी कमनी पद सेवति निस दिन ।
यह सुखै अपने सपने कबहूं नहिं देख्यो तिन ॥ ४७ ॥
कहीं न परै महेस सेस पैं गुरु गनेस पैं ।
चकित जहाँ सरस्वती इती मति कहं सुरेस पैं ॥ ४८ ॥
कुसुम धूरि धूंधरे कुञ्ज मधुकरन पुञ्ज जहं ।
ऐसें ही रस अलस लड़ैतिन कीनो प्रवेस तहं ॥ ४९ ॥
नव पल्लव कर सैनी अति सुख दैनी तिहं तर ।
तापर सुमन उसैनी मधुर निरैनी तिहिं पर ॥ ५० ॥
कबहुँ परस्पर छबि सों भरावत प्रेम मदन भर ।
प्राकृत काम छांति अजहूं धरकत जाके डर ॥ ५१ ॥
बिलसति अति रति जुद्ध रुद्ध सों रत रस सागर ।
उज्जल प्रेम उजागर सब गुन-आगर नागर ॥ ५२ ॥
हीर हार में उरझि उरझि बहियां में बहियां ।
नील पीत पट उरझि उरझि बेसर नथ महियां ॥ ५३ ॥
करि अद्भुत कल केलि झेलि रस कुञ्ज-सदन के ।
चले जमुन जल क्रीड़न ब्रीड़न बृन्दं मदन के ॥ ५४ ॥
उरसि मरगजी माल चाल मद गज गति मलकत ।
घूमत रस भरे नैन गण्डस्थल श्रमकन झलकत ॥ ५५ ॥

पाठान्तर १ यह पद मथुरा वाली पुस्तक मे नहीं है । २ जद्यपि यह पद कमल जु कमला सेवति निसदिन ३ रस ।
४ पायो । ५ यह पद मथुरा वाली पुस्तक मे नहीं है ।
६ यह पद मथुरा वाली पुस्तक मे नहीं है । ७ सिरसे ।
८ सुन्दर सुमन सु निरखत अति आनन्द हिय बरसैं ।
९ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है । १० बिहसत रति अविरुद्ध शुद्ध सुरत रस सागर । ११ यह पद चन्द्रिका मे नहीं है । १२ यहि विधि विविधि विलास (विलस) कुञ्ज सदन के । १३ कोटि
१४ यह पद चन्द्रिका मे नहीं है ।

धाय जमुन जल धसं लसे छवि परत न बरनी ।
    विहरत मनु गजराज सङ्ग लिए तरुनी करनी ॥ ५६ ॥
श्रम भरि सुन्दर अङ्ग रास-रस-ललित-श्रलित गति ।
    अंसनि पर भुज वरें दीने सोभित सोभा अति ॥ ५७ ॥
कमल बदन पर अलकनि[3] कहुं कहुं श्रम जल[4] झलकनि ।
    सदा वसौ मन मेरे मञ्जु[5] मुकुट की लटकनि[6] ॥ ५८ ॥
मोहन[7] पिय की मलकनि ढलकनि मोर मुकट की ।
    सदा वसौ मन मेरे फरकनि पियरे पट की ॥ ५९ ॥
टूटि मुकति की माल छूटि रहि सावँरे उर पर ।
    जनु[8] सिङ्गार पहार तें सुरसरि धाइ धसीं धर ॥ ६० ॥
घूमत[9] रस भरे नैन चलनि मलकनि मन हरनी ।
    जनु गजराज विराजै सँग लिए तरुनी करनी ॥ ६१ ॥
जँह[10] काहू को गमना जमुना अति सुख दैनी ।
    जग मगाति तट घाट महा मनि जटित निसैनी ॥ ६२ ॥
केलि[11] विटपनि सों लपटि लता फूलीं झूलीं जल ।
    बिलसत सारस हंस बंस विगसत अम्बुज दल ॥ ६३ ॥
तँह[12] अद्भुत जल केलि वनी छवि कही न परई ।
    जिहि चितवत चित रञ्चक वञ्चक कलिमल हरई ॥ ६४ ॥
कोउ[13] आपुनही धसी लसी पिय सों रतिमानी ।
    कोउ पट गहि कोउ लट गहि छवि सों पानी आनी ॥ ६५ ॥

पाठान्तर—१ सरस अति मिलत ललित गति । २ दिए लटक सोभा सोभित अति । ३ अलक छुटी । ४ की । ५ मोर ६ ढलकति । ७ यह पद चन्द्रिका मे नहीं है । ८ मनु गिर ते सुरसरी जुहु निधि गिरीं धार धर । ९ १०, ११, १२, १३, ये पद मथुरा वाली पुस्तक मे नहीं है ।

तियनि के तन जल-मगन[2] वदन तहुँ यों छबि छाए ।
फूली हैं जनु जमुन कनक के कमल सुहाए ॥ ६६ ॥
मञ्जुल[5] अञ्जुल भरि भरि पिय कों तिय जल मेलत ।
जानों अलि अरविन्दवृन्द मकरन्दहिं झेलत ॥ ६७ ॥
मुख[6] कमलनि के आगें जल अरविन्द लगे अस ।
भोर भएँ भौनानि के दीपक मन्द परत जस ॥ ६८ ॥
कबहुँ परस्पर छिरकत मञ्जुल अञ्जुल भरि भरि ।
अरुन कमल मण्डली फाग खेलत रस रँग अरि ॥ ६९ ॥
रुचिर दृगञ्चल चञ्चल अञ्चल में[8][9][10] झलकैंत अस ।
सरस कनक के कञ्जन खञ्जन जाल परत जस ॥ ७० ॥
कमलनि[12] तजि तजि अलिगन मुख कमलनि आवति जब ।
छवि सों छबीली बाल छिपति जल में बुड़कनि तब ॥७१॥
जमुना जल में तुरि सुरि कामिनि करत कलोलैं[13] ।
जनु[14] घन भीतर भीतर ससिगन तारे तरि डोलैं ॥ ७२ ॥
अलिगन[15] कमलनि तजि सुमुख कमलनि पर आवत ।
छवि सों छबीले छैल भेंटि लेहि छिनहिं उड़ावत ॥ ७३ ॥
कबहुँक सब मिलि बाल लाल कों छिरकति छबि अस ।
मनसिज पायो राज आजु अभिषेक होत जस ॥ ७४ ॥
निकसी[16] सुन्दरि भाँति कान्ति मन ही मन भावै ।
बाल-बैस छबि जैसे कवि पैं कही न आवै ॥ ७५ ॥

पाठान्तर—१ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है । २ झलमलत ।
३ भाँति । ४ जमुना कन के फूल रहे मनु मगन सुहाए ।
५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
६ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है । ७ छिरकति छलि जु ।
८ जानो । ९ क्रांग । १० बर । ११ अगमग ।
१२ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है । १३ बिलालैं
१४ मानों तव घन मध्य दामिनी दामिन डोलैं ।
१५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है ।
१६ तिनकी सुन्दर काँति भाँति मनमोहन भावै, बाल-बैस छवि कवि पैं कबहूँ कहत न आवै ॥

भीजि बसन तन लपटि निपटही अद्भुत छबि सब
    नैननि के नहिँ बैन बैन के नहिनें[2] नैन तब ॥ ७६ ॥
रुचिर निचोंरनि चुवत नीर लखि भये अधीर तनु ।
    तन बिछुरन की पीर चीरै[3] अँसुअन रोवत जनु ॥ ७७ ॥
तब इक द्रुम तन चितै कुअँर अँस[4] अज्ञा दीनी ।
    निरमोलक[5] अम्बर भूषन [6]तिहिँ बरषा कीनी ॥ ७८ ॥
अपँ अपनी रुचि के पहिरे छवि परत न बरनी ।
    जग मोहिनी जिनी तिन की मोहिनि व्रज-घरनी ॥ ७९ ॥
व्रह्म मुहूरति कुअँरि कान्ह निज[9] घर आए [10]तब ।
    गोपनि अपनी गोपी अपनें ढिग पौंई[11] सबै[12] ॥ ८० ॥
[13]ऐसें ही जानि सरद की परम मनोहर रातैं ।
    क्रीड़त हैं पिय रसिक सु दिन दिन अन अन भातैं ॥ ८१ ॥
नित्त रास-रसमत नित्त गोपीजन-वल्लभ ।
    नित्त निगम यों कहत नित्त नव तन अति दुर्लभ ॥ ८२ ॥
सिवं[14] मन ही मन ध्यावैं काहू नाहिँ जनावैं ।
    सनक सनन्दन नारद सारद अति मन भावैं ॥ ८३ ॥
यह लीला गोपाललाल की परम रसावधि ।
    सिव सुक नारद सारद तिनको इहै महानिधि ॥ ८४ ॥
[15]अंज अजहूँ रज वाञ्छित सुन्दर वृन्दावन की ।
    सांऊ तनक न पावत सूल मिटत नाहिँ तन को ॥ ८५ ॥

पाठान्तर—१ जु छवि नहिँ जाप कहीं है। २ नैन नहीं है। ३ धीर।
४ बर। ५ निरमल। ६ तिनहीं
७ अपनी अपनी रुचि के पहिरे वसन बर्मी छबि।
जग में ए मोहन आए तिन की व्रज तिय मोहिनी सब
८ मथुरा वाली पुस्तक में यहाँ पर यह दोहा है।
यह जु सरद की जितो इक परम मनोहर रात,
खेलत रास रसिक की प्रति छिन नइ नइ भाँत ॥
९ सब, १० जब, ११ जानी, १२ तब
१३ यह पद मथुरा वाली पुस्तक में नहीं है,
१४ यह चन्द्रिका में नहीं है, १५ यह पद चन्द्रिका में नहीं है,

बिनु अधिकारी भये नहीं वृन्दावन सूझै ।
    रेनुँ कहाँ ते सूझै जब लौं वस्तु न बूझै ॥ ८६ ॥
निपट निकट घट में ज्यों अन्तरजामी आही ।
    विषय बिदूषन इन्द्री पकरि सकै नहिँ ताही ॥ ८७ ॥
जु कोउ प्रीति सों गान करै अति सुनै गुनै हिय ।
    प्रेम-भगति तिहि देहिं दया करि हरि नागर पिय ॥ ८८ ॥
हीन असमर्थक निन्दक नास्तिक धरम- बहिर्मुख ।
    तिन सों कबहुँ न कहौ कहौ तौ नहिँन लहौ सुख ॥ ८९ ॥
नैन-हीन के हेत नवल नागरि नारी जस ॥
    मन्द हँसनि मुकटाच्छ लसनि वह का जानै रस ॥ ९० ॥
भगत जनन सों कहौ जिनके भागवत धरम बल ।
    ज्यों जमुना के मीन लीन नित रहत जमुन जल ॥ ९१ ॥
जदपि सपत-निधि भेदक जमुना निगम बखानहिं ।
    ते तिहि धारहिं धार रमत छुअत न जल आनहिं ॥ ९२ ॥
हरि-दासन को सङ्ग करै हरि-लीला गावै ।
    परम कान्त एकान्त भगति-रस तौं भल पावै ॥ ९३ ॥
उज्जल रस-मनि-माला कोटि जनन के पोई ।
    सावधान हेरौ फेरौ तोरौ-जिनि कोई ॥ ९४ ॥
श्रवनसार कीर्तन को सार सुमिरन को सार पुनि ।
    ज्ञानसार विज्ञानसार सतसार गहत गुनि ॥ ९५ ॥

पाठान्तर—१, २, ये पद चन्द्रिका में नहीं हैं,
३ जो यह लीला हित सों गावै सीखै सुनै सुनावै ।
प्रेम भगति सो पावै अरु सब के हिय भावै ॥
४ नैन हीन रसमायक ताकों नव नागरि जस,
५ विन, ६ रसिक जननि के सङ्ग रहै, ७ परम रस,
८ सोइ, ९ यह उज्जल रस-माल,
१० सावधान होइ पहिरौ याहि तोरौ-मति कोई ।
११ श्रवन कीर्तन सार सार सुमरन को है पुनि ।
ज्ञानसार हरि-ध्यान-सार श्रुतिसार गुथा गुनि ।

[1] यह अद्भुत रस-रासि कहत कछु नहिँ कहि आवै ।
सुक सनकादिक नारद सारद अतिसय भावै ॥ ९६ ॥
[2] मन-हरनी कलिमल-हरनी भव-जल-निधि-तरनी ।
नन्ददास के कण्ठ बसौ नित मङ्गल करनी ॥ ९७ ॥

[3] इति श्री भागवते महा पुराणे दशम स्कन्धे रास क्रीड़ायां
नन्ददास कृतौ पञ्चमोऽध्यायः ॥

पाठान्तर—१ यह अद्भुत रस-रासि महा छवि कहत न आवै ,
सेस सहस मुख गावत तौहू अन्त न पावै ,
२ [illegible] हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम वित्तरनी ,
३ चन्द्रिका में इति श्री नहीं लगाया है , मूल श्रीमद्भागवत में
इस अध्याय का नाम " रास क्रीड़ा वर्णन " लिखा है